www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13

दयानन्दाब्द १८६,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं.- १९६०८५३११३

वर्ष-12 | अंक-17 | पौष कृ. अमावस्या से पौष शु. १४ सं. २०७० वि. | 01 से 15 जनवरी 2014 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 10 | प्रति-5/-

जो दयानन्द व आर्यसमाज का नहीं, वह हमारा नहीं : आनन्द पुरुषार्थी

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

अश्विनी दुबे
आगरा।

मंदिर में आर्यसमाज के पास भवन तो है, परन्तु पार्किंग के लिए जगह न होने के कारण कुछ वर्षों से पास ही के उद्यान पार्क व्यू रेजीडेंसी, नार्मल कम्पाउंड, पन्चकुइया, कोठी मीना बाजार मार्ग, ताज मोटर्स के सामने आगरा में उत्सव करते हैं। अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिल रही है।

इस बार होशंगाबाद (म.प्र.) के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी तथा पंडित नघुनाथ देव वैदिक भूषण भजनोपदेशक एटा से मुख्य रूप से आमंत्रित थे। अध्यात्म, राष्ट्र, पर्यावरण इतिहास व यज्ञ से संबन्धित अनेक तथ्यात्मक बातें पृथक-पृथक सत्रों में जनता जनार्दन को सुनने को मिलीं। अंतिम पूर्णाहुति के दिन 17 यज्ञवेदियों पर 51 यजमान दम्पत्तियों की उपस्थिति में अनेक वेदमंत्रों से यज्ञ के ब्रह्मा पुरुषार्थी जी ने आहुतियां दिलायीं। पिछले वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के उत्सव के बाद यह दूसरा अवसर था, जब इतनी बड़ी संख्या में यजमानों का एकत्रीकरण हुआ। ऋत्विक व वेदपाठी के रूप में समाज के पुरोहित पं0 अशोक शास्त्री व रघुनाथ वैदिक भूषण थे। नगर निगम के मेयर इन्द्रजीत आर्य ने कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूं, उसमें आर्यसमाज की बहुत बड़ी भूमिका रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के प्रधान आचार्य स्वदेश जी ने प्रेरणास्पद उद्बोधन में आर्यसमाज व आर्यसमाज व राष्ट्रीय दृष्टि से सुर-असुरों के बीच के युद्ध में हम आर्यों की निर्णायक भूमिका का उल्लेख किया। स्थानीय पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, श्रीमती शारदा नागर कवयित्री, डॉ. जितेन्द्र आर्य भीलवाड़ा आदि का उपदेश सभी को सुनने का अवसर मिला। मंच का संचालन यशपाल आयमुनि वानप्रस्थ ने किया। मंत्री, प्रधान, कार्यकारिणी के सभी सदस्य व अश्विनी व अनुज आर्य की युवा टीम के साथ महिला आर्यसमाज का विशेष योगदान रहा। आगरा के अनेक आर्यसमाजों से महानुभावों के आगमन से आयोजकों को काफी प्रसन्नता हुई। सहयोगियों को ऋषि दयानन्द का चित्र व फल देकर सम्मानित भी किया गया। ऋषि लंगर में सभी आगंतुक आर्यजनों के भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

आर्यसमाज नाई की मण्डी आगरा में यज्ञ का दृश्य- केसरी।

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन इन्दौर व दिल्ली में

अर्जुन देव चड्ढा/विनय आर्य
इन्दौर (म.प्र.)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्णयानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मध्य भारत में प्रथम बार आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन 19 जनवरी 2014 रविवार को प्रातः 10 बजे से आर्यसमाज मल्हार में होगा। सभा द्वारा आयोजित यह छठा वैवाहिक सम्मेलन है तथा सातवां सम्मेलन 02 फरवरी 2014 को आर्यसमाज, विकासपुरी, डी-ब्लॉक, नई दिल्ली में होगा।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रकाश आर्य ने बताया कि इससे पूर्व दिल्ली में पांच आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किए जा चुके है, जिसके अच्छे परिणाम सामने आये हैं। उसी श्रृंखला में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयानुसार दिल्ली से बाहर मध्य भारत में पहली बार यह आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन मध्य भारत के महानगर इन्दौर में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम को लेकर आर्य परिवारों में भारी उमंग और उत्साह है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुसार युवक-युवतियों को युवावस्था में परस्पर समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक एवं युवती से ही विवाह करना चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जाति के बंधनों को तोड़कर वर्ण व्यवस्था के अनुसार आर्य संस्कारों से युक्त नई पीढ़ी के निर्माण के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसमें आर्य परिवारों को एक ही स्थान पर आर्य संस्कारों से युक्त वर और वधु के चयन का अवसर प्राप्त हो सकेगा। आयोजक मण्डल ने आर्य परिवारों से अनुरोध किया है कि वे अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र रजिस्ट्रेशन करवाएं। रजिस्ट्रेशन फार्म हेतु आर्य समाज मल्हारगंज से संपर्क करें अथवा दिल्ली सभा की वेबसाईट www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं तथा ऑनलाइन भी फार्म भर सकते है। रजिस्ट्रेशन फार्म 31 दिसम्बर 2013 तक भरकर साथ में निर्धारित पंजीयन शुल्क दो सौ रूपये का ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को भिजवायें, जिससे अभ्यर्थी का नाम व परिचय, विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आने वाले आर्य परिवारों के आवास, चाय-नाश्ते व दोपहर के भोजन की निशुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर ही रहेगी।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- २०१४

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- २५ फरवरी से २ मार्च २०१४

प्रस्थान : 25 फरवरी 2014 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 24 फरवरी 2014 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी :** 02 मार्च 2014 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थान

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा ज्योतिबा फुले नगर, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 31 दिसम्बर 2013 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, छोटी-थाली, गिलास, लोटा, कटोरी, मग्गा, पानी की बोतल, टॉर्च, चाकू, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, तहमद, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मंन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। ● राशि व्यास्थापक श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, सरायतरीन के पास भी जमा की जा सकती है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

❒ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, ❒ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333), ❒ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), ❒ शिव चरन सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष, ❒ नरेन्द्र कान्त गर्ग- संयोजक (09837809405), ❒ वीरेन्द्र कुमार आर्य- व्यवस्थापक (9927892665)

साधक जी की स्मृति में हुई काव्य गोष्ठी

अमरोहा। रामकुमार साधक की स्मृति में कवि पं. रामकुमार प्रभाकर शास्त्री की अध्यक्षता में कवि गोष्ठी हुई। संचालन वीरेन्द्र शुक्ला ने किया। इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के संपादक डॉ0 अशोक कुमार आर्य ने कहा कि साधक जी का काव्य जयशंकर प्रसाद की परम्परा का काव्य है। उन्होंने अपनी कृति 'साधना' में काव्य के विविध आयाम प्रस्तुत किये।

साधक जी की स्मृति में आयोजित कवि गोष्ठी में विमल किशोर वन्देमातरम् ने कहा- जो कठिन था साधना से, वह सरल तुमने किया/ काव्य में तुमने अमर रस हां महारस भर दिया। साधक जी का नमन करते हुए जैड. ए. नजमी अमरोहवी ने कहा- कुछ पढ़े लिखों ने उस पर लिख दिया खुद अपना नाम/भूखे बच्चों के लिए, बस्ती में जो खाना गया। साधक जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कवि नरेन्द्र त्रिवेदी 'भावुक' ने कहा- मौसम के साथ-साथ चाह बदल जाती है/मंजिल के साथ-साथ राह बदल जाती है।

नगर के शायर भुवनेश शर्मा 'भुवन' अमरोहवी ने कुछ यूं कहा- साधक जी अपनी यादें बसाकर चले गये/ मदिरा ज्ञान की वह पिला कर चले गये। प्रकाश प्रजापति ने इस प्रकार कहा- हमने देश बनाना था, पर हम बाजार बना बैठे/ अपने बच्चे-बच्चे को हम खरीदार बना बैठे। चमनलाल 'रवि' ने साधक जी को नमन् करते हुए यूं कहा- साहित्य भूषण, साहित्य रत्न, साहित्य अलंकार थे साधक जी/मां भारती के सशक्त कलमकार थे साधक जी।

इस अवसर पर संयोजक पं0 खेमकरण शर्मा ने साधक जी के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए देश की वर्तमान दशा पर कटाक्ष किया। माया शर्मा, शशि त्यागी, राजेश शर्मा व मीरा जी आदि ने भी खूब समां बांधा।

एकता के लिए दौड़े हजारों जनपदवासी

सरदार सरोवर में बनेगा पटेल का भव्य स्मारक

डॉ० नवाब सिद्दीकि
अमरोहा।

आज हम जिस विशाल भारत को देखते हैं, उसकी परिकल्पना सरदार वल्लभभाई पटेल के बिना पूरी नहीं हो सकती। सरदार पटेल एक ऐसे महानायक थे जिन्होंने देश के छोटे-छोटे रजवाड़ों और राजघरानों को एक कर भारत में सम्मिलित किया। ये विचार यहां लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की 63वीं पुण्यतिथि पर आयोजित 'एकता के लिए दौड़' कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह ने व्यक्त किये।

ज्ञातव्य है कि नर्मदा सागर स्थित सरदार सरोवर बांध में विश्व की सर्वाधिक ऊंची सरदार बल्लभ भाई पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा की स्थापना की जाएगी। इसके लिए निर्मित लौह संग्रहण समिति के जिलाध्यक्ष डॉ. मोमराज सिंह गुर्जर ने कहा कि 597 फुट ऊंची इस विशालतम लौह प्रतिमा की स्थापना के लिए प्रत्येक ग्राम से न्यूनतम 100 ग्राम से अधिकतम 1 किलोग्राम तक लोहा तथा 100 ग्राम मिट्टी का संग्रह किया जाएगा।

इस अवसर पर भाजपा के जिलाध्यक्ष गिरीश त्यागी ने कहा कि यदि सरदार पटेल को देश का प्रधानमंत्री बनने दिया गया होता, तो देश की स्थिति आज विश्व में कुछ और ही होती।

यहां जोया मार्ग स्थित शिवानी बैंकट हॉल से मधुरम वाटिका तक कई हजार की संख्या में नर-नारी व बच्चों ने 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम में भाग लिया। दौड़ में भाग लेते हुए जनपद भर से उमड़ा जनसमूह 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत', 'सरदार वल्लभ भाई पटेल अमर रहें', 'भारत माता की जय', 'वन्देमातरम् - वन्देमातरम्' के जयघोषों से आकाश को गुंजायमान कर रहा था।

इस अवसर पर ओज के कवि विमल किशोर वन्द्रमातरम्, अमरोहा विधान सभा लौह संग्रहण समिति के संयोजक डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी, धनौरा के संयोजक डॉ. भीष्म आर्य, नौगांवा के संयोजक डॉ. चन्द्रहास, हसनपुर के संयोजक डॉ. राकेश बंसल उर्फ कालू, किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष अनिल त्यागी, धनौरा नगरपालिका के अध्यक्ष राजेश सैनी, गजरौला नगरपालिकाध्यक्ष व पूर्व विधायक हरपाल सिंह, डॉ. के. एस. सैनी, रामसिंह सैनी, शांतिदेवी सैनी, तरुण राठी, दिनेश सैनी, सुरेश नागर, कविता चौधरी, जयप्रकाश तोमर, नरेश चौधरी, सर्वेश सैनी, डॉ. कमल मलिक, अतुल कुमार जैन, युद्धवीर सिंह, विजय पंवार, राकेश वर्मा, नरेन्द्रकान्त गर्ग, डॉ. मनन कौशल, डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार, मुकेश सक्सैना, तिलक राज, ओमप्रकाश कपूर, श्यामलाल, हरकेश सिंह प्रजापति, चर्चल गुप्ता, चेतन गुप्ता आदि सहित भारी संख्या में जनसमूह उपस्थित था। अन्त में संयोजक डॉ. गुर्जर ने सभी को धन्यवाद दिया।

सुमित अग्रवाल एम.फिल. से विभूषित

डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार
मण्डी धनौरा (अमरोहा)

आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता तथा धनौरा के प्रसिद्ध समाजसेवी व गांधीवादी नेता स्व. चचा जयगोपाल के पौत्र सुमित अग्रवाल ने मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम. फिल. की उपाधि प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर नगर एवं आर्यसमाज का नाम रोशन किया है। सम्प्रति श्री अग्रवाल वाई.एम.एम. डिग्री कालेज में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। हाल ही में, उन्होंने मोरना स्थित देवता महाविद्यालय में 'पर्यावरण-मूल्य एवं चुनौती' विषयक राष्ट्रीय सेमिनार में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्ता श्री अग्रवाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा में उपमन्त्री तथा मनरेगा निगरानी समिति के जिला सह प्रभारी के साथ ही, विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक संगठनो में सक्रिय हैं।

गुरुतेग बहादुर का बलिदान दिवस मनाया

सरधना (मेरठ)/ रवि कुमार आर्य। आर्यसमाज मन्दिर औरंगनगर में गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सरधना से पधारे रामवीर जी ने उनके बलिदान के विषय में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दिल्ली स्थित चांदनी चौक के पास गुरुतेग बहादुर की स्मृति में गुरुद्वारा शीशगंज स्थापित है। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान राज सिंह, उपप्रधान राजू, द्विनाम, कृष्ण कुमार, अरविन्द कुमार, सुभाष आर्य, संजय आर्य, सुरेन्द्र सिंह आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

योग भगाए रोग

भुजंगासन

योगाभ्यास एवम् साधना

योग का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इस स्तम्भ में स्वामी कर्मवीर जी द्वारा आसनों की विधि एवं उनसे होने वाले लाभ दिये जा रहे हैं।
- सम्पादक

विधि : १. पेट के बल लेट जाइए। हाँथों की हथेलियाँ भूमि पर रखते हुए हाथों को छाती के दोनों ओर रखें। कोहनियां ऊपर उठी हुई तथा भुजायें छाती से सटी हुई होनी चाहिए।

२. पैर सीधे तथा पंजे आपस में मिले हुए हों। पंजे पीछे की ओर तने हुये व भूमि पर टिके हुये हों।

३. श्वांस अन्दर भरकर छाती एवं सिर को धीरे-धीरे ऊपर उठाइए। नाभि के पीछे वाला भाग भूमि पर टिका रहे। सिर को ऊपर उठाते हुये ग्रीवा को जितना पीछे की ओर मोड़ सकते हैं मोड़ना चाहिए। इस स्थिति में करीब ३० सेकेण्ड रहना चाहिए।

४. इस प्रकार इसकी यथाशक्ति आवृत्ति करें। इसका अभ्यास होने के बाद इसी आसन को विस्तृत भुजंगासन एवं पूर्ण भुजंगासन के रूप में भी किया जा सकता है।

लाभ : सर्वाइकल, स्पोंडोलाइटिस व स्लिपडिस्कादि समस्त मेरुदण्ड के रोगों के लिये महत्वपूर्ण आसन है।

ओ३म्

॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥

गुरुकुल प्रभात आश्रम

टीकरी, भोला झाल, मेरठ- २५० ५०१ (उ.प्र.), दूरभाष- ०९७५८७४७९२०

वैदिक शोध-संगोष्ठी एवं वार्षिकोत्सव निमन्त्रण-पत्र

विषय : वैदिक वाङ्मय में भूगोल

सम्मान्य महोदय/महोदया!

आपको यह सूचित करते हुए महती प्रसन्नता हो रही है कि पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी **स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ (उ.प्र.)** में **पौष शुक्ल त्रयोदशी, वि.सं. २०७० सोमवार;** तदनुसार दिनाङ्क १३.०१.२०१४ को प्रात: १० बजे वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के स्मृति-दिवस के उपलक्ष्य में **'वैदिक वाङ्मय में भूगोल'** विषय पर आयोजित **अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी** में शोधपत्र प्रस्तुत करने एवं चर्चा में भाग लेने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं। विद्वज्जनों से निवेदन है कि अग्रलिखित विषयों पर अपना शोधलेख Walkman-Chanakya-901 फॉन्ट में टङ्कित कर pavamani1986@gmail.com पर ई-मेल करें तथा टंकित एक प्रति अपने साथ लाने का कष्ट करें। आप द्वारा शोधगोष्ठी में प्रस्तुत सभी स्तरीय लेख त्रैमासिकी शोधपत्रिका ISSN-२२२१-६३२८ **'पावमानी'** में प्रकाशित किये जाते हैं।

- शोधगोष्ठी में अग्रलिखित बिन्दुओं पर आप अपना शोधलेख प्रस्तुत कर सकते हैं :-

१. वैदिक संहिताओं में भौगोलिक-तत्त्व-विवेचन।
२. वेदोक्त देशवाची शब्दों का विवेचन।
३. वेदों के देशवाचक शब्दों से वेदों में अनित्यता दोष।
४. सप्त सैन्धव प्रदेश- एक विवेचन।
५. वेदोक्त स्थलीय प्रदेशों का विवेचन।
६. वेदोक्त स्थलीय प्रकृति का स्वरूप।
७. वेदोक्त समुद्र विवेचन।
८. वेदों में प्रकृति की संरचना।
९. वेदोक्त विविध नदीवाचक शब्दों का विवेचन।
१०. वेदोक्त वनसम्पदा-विवेचन।
११. वेदों में कृषि, पशुपालन।
१२. वेदों में उद्योग एवं व्यापार।
१३. वेदों में आर्य, द्रविड़ एवं अन्य जन विवेचन।
१४. वेदों में राजनीतिक-क्षेत्र-विवेचन।
१५. ब्राह्मण ग्रन्थों में उपर्युक्त विविध भौगोलिक तथ्य-विवेचन।
१६. उपनिषदों में उपर्युक्त विविध भौगोलिक तथ्य-विवेचन।
१७. आरण्य ग्रन्थों में उपर्युक्त विविध भौगोलिक तथ्य-विवेचन।
१८. वेदाङ्गों में उपर्युक्त विविध भौगोलिक तथ्य-विवेचन।

आशा है विद्वज्जन वैदिक ज्ञान-विज्ञान एवं संस्कृति-सभ्यता के प्रसार हेतु आयोजित इस गोष्ठी को सफल करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

दिनांक: १४.०१.२०१४, मंगलवार को मकर सौर संक्रान्ति के पावन पर्व पर गुरुकुल का वार्षिकोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, जहां अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों के प्रवचन तथा भजनोपदेशकों के भजनोपदेश होंगे। दिनांक ९ जनवरी २०१४ से आरम्भ 'अथर्ववेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति तथा नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न होगा तथा ब्रह्मचारियों के व्याख्यान एवं बल प्रदर्शन आदि आकर्षक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जायेंगे। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	सुषमा सर्राफ	प्रो. सोमदेव शतांशु	आचार्य वाचस्पति
कुलाधिपति	प्रधान	संयोजक	मन्त्री

www.thearyasamaj.org

वैदिक सत्संग सम्पन्न : प्रतिमास आर्यसमाज से अपरिचित युवा दम्पतियों को जोड़ने का संकल्प

पं. महेन्द्र कुमार शास्त्री
सोनीपत (हरियाणा)

आर्यसमाज द्वारा आयोजित वैदिक सत्संग में विचार व्यक्त करते ओम साधना मण्डल के अध्यक्ष स्वामी दयानन्द विदेह- केसरी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के तत्वावधान में महेन्द्र कुमार शास्त्री के निवास स्थान म0 नं0 162-आर0, मॉडल टाऊन सोनीपत में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र0 संदीप ने प्रश्नोत्तर रूप में धर्म की परिभाषा के ऊपर व्यख्यान करते हुए कहा कि धर्म के सत्य स्वरूप को जानकर ही मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है वर्तमान में मनुष्य धर्म के सत्य स्वरूप को बिना जाने ही अपने आप को धार्मिक बनाने का प्रयास कर रहा है, जो कि वेद विरूद्ध है।

संसार में वेद का मार्ग सबसे समतल, सरल, आसान और सुखदायी है। हम मनुष्यों को वेद रूपी उत्तम मार्ग अपनाना चाहिए। मनुष्य का मुख्य उददेश्य है मोक्ष को प्राप्त करना, उस मोक्ष को केवल वेद मार्ग ही अपना कर प्राप्त किया जा सकता है अंत में कहा कि वेद मार्ग पर चलना धर्म है, इसके विरुद्ध चलना अधर्म है और अधर्म मार्ग पर चलने वाले को मानव चोला भी प्राप्त नहीं हो सकता। करनाल से आये ओम साधना मंडल के संस्थापक स्वामी दयानन्द विदेह ने धर्म की सरल व्याख्या करते हुए सुविचार-धर्म, कुविचार- अधर्म, सुश्रवण-धर्म, कुश्रवण-अधर्म, सुचाल-धर्म, कुचाल-अधर्म, सुवाणी-धर्म, कुवाणी-अधर्म बताया। उन्होंने वेद, स्मृति, सदाचार के अनुरूप कर्म करना धर्म कहा उन्होंने हास्य प्राणायाम के द्वारा कार्यक्रम में आए हुए श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। उसके पश्चात् स्वामी जी का प्रवचन आर्य समाज ऋषिनगर में हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि सूर्य का रोल आर्य समाज को निभाना है, मानवमात्र का मार्गदर्शन करना है। इस कार्यक्रम का उददेश्य जो युवा दम्पति अभी तक आर्यसमाज की विचारधारा से अपरिचित हैं ऐसे युवा दम्पतियों को इस कार्यक्रम में आमन्त्रि कर वैदिक सिद्धान्तों से जोड़ने का प्रयास आरम्भ किया गया। शान्तिपाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में प्रवीन कुमार गुप्ता, नवीन कुमार, संजीव कुमार, प्रियव्रत आर्य, सत्यव्रत आर्य, अनन्त कुमार आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, रोहन, जितेश, श्री भगवान, निर्मला आर्या, सोनम, मुकेश रावत, गुलशन लाल, निझावन, उदय शास्त्री आदि उपस्थित थे।

धूमधाम से किया वेद-प्रचार

डॉ० अशोक आर्य
मण्डी डबवाली (हरियाणा)।

आर्यसमाज का वार्षिक वेद प्रचार उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल सुजुमा कैथल की आचार्या लक्ष्मी भारती के तीन दिनों तक प्रवचन हुए। इसी गुरुकुल की कन्या कु. ऋचा तथा कु. ऋषिका के भजनों के अतिरिक्त आर्य जगत के चोटी के भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक के ओजस्वी भजनोपदेशों ने जन-जन का मन मोह लिया। उनके द्वारा प्रस्तुत- 'तेरी अपार महिमा कैसे बयान होवे/ कुछ बोलने से पहले गूंगी जुबान होवे', तथा 'नमस्कार भगवान तुझे भक्तों का बारम्बार हो, श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो,' भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर पथिक जी ने सत्संग की महिमा का बखान करते हुए कहा कि सत्संग का अर्थ सत्पुरुषों अर्थात् सज्जन जनों, तथा गुरुजनों का संग करना है। गुरुकुल की आचार्या लक्ष्मी भारती ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सभी को धर्म के अनुरूप ही कार्य करना चाहिए।

कछुए से प्रेरणा लें

कृष्ण मोहन गोयल, अमरोहा

जिंदगी में यदि लम्बा सफर चाहते हो तो "**कछुए**" से प्रेरणा लो। कछुआ जलचर है परन्तु ज्यादातर समय जमीन पर ही व्यतीत करता है। अपने अंडे नदी के किनारे पर ही देता है कछुआ धीरे-धीरे चलता है। कम खाता है तथा किसी से स्पर्धा नही रखता। मनुष्य को चाहिये कि कछुए की भांति जीवन में शांति बनाये रखें। संतोष जीवन का लक्ष्य होना चाहिये। कम खाना सेहत के लिये फायदेमन्द है। तेज गति खरगोश की तरह होती है परन्तु खरगोश की उम्र कछुआ से बहुत कम है। जानकार सूत्रों के अनुसार कछुए की उम्र 400 साल तक होती है।

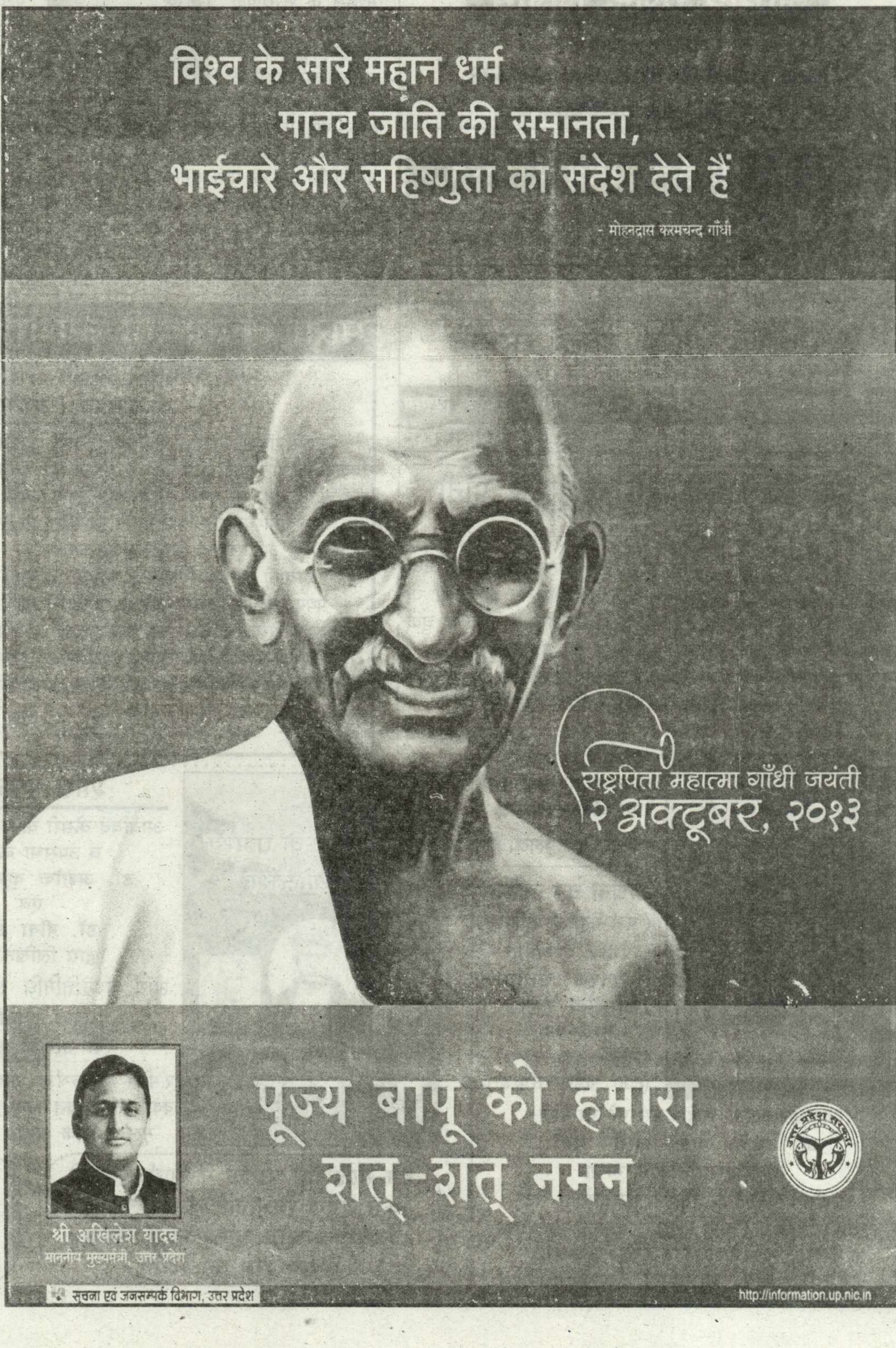

गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव १० से

हरिपुर (उड़ीसा)। गुरुकुल का चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव 10 से 12 जनवरी 2014 तक अनेक प्रेरक सम्मेलनों- नारी जागृति सम्मेलन, वैदिक परिवार सम्मेलन, संस्कार रक्षा सम्मेलन तथा गुरुकुल सम्मेलन के साथ स्वनामधन्य अनेक वैदिक संन्यासियों एवं विद्वानों की पवित्र उपस्थिति में सम्पन्न होगा। आयोजन समिति ने अपील की है कि सभी ईश्वरानुरागी, धर्मप्रेमी, यज्ञप्रेमी, गुरुकुलप्रेमी सज्जनवृन्द सपरिवार इष्टमित्रों सहित भारी संख्या में पधारकर लाभान्वित हों।

१२७वां वार्षिकोत्सव भव्यतापूर्वक सम्पन्न

जालन्धर। आर्यसमाज, अड्डा होशियारपुर का 127वां वार्षिकोत्सव 01 दिसम्बर को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महात्मा चैतन्य मुनि, माता सत्याप्रिया यति व राजेश प्रेमी भजनोपदेशक ने ज्ञानामृत की वर्षा की। समारोह में स्वस्ति एवं राष्ट्र-कल्याण यज्ञ में श्रद्धालुओं द्वारा आहुतियां प्रदान की गयीं। प्रधान विनोद सेठ ने सभी सहयोगियों व सहभागियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

गुरुकुल हरिपुर का वेदप्रचार व सहायता शिविर

दिलीप कुमार जिज्ञासु
हरिपुर (उड़ीसा)।

गुरुकुल हरिपुर विगत तीन वर्षों से विभिन्न प्रान्तों में वेद प्रचार, समाजसेवा एवं शिक्षा, संस्कारों के कार्यों में लगा हुआ है। इसी क्रम में ओडिशा के नवरंगपुर जिले में, जो जंगल एवं पहाड़ों से घिरा हुआ है तथा जहां निवासी शिक्षा एवं संस्कृति से 80-90 प्रतिशत वंचित हैं, और स्त्री-पुरुष अब भी तन ढकने के लिये पूरे कपड़े नहीं पहनते, जहां के दो-तीन विकास खण्डों के गांवों में किसी भी संस्था द्वारा यज्ञ आदि कार्यक्रम भी नहीं कराये जाते, ऐसे क्षेत्र में पहुंचकर 16-17 नवम्बर को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में 600 निर्धन परिवारों का चयनकर पापराहाण्डी विकास खण्ड के केन्दुगुड़ा, नुआकोट एवं गणभाटा को केन्द्र बनाकर तीनों केन्द्रों पर यज्ञ एवं प्रवचन के साथ-साथ प्रत्येक निर्धन परिवार को 25-25 किलो चावल (मूल्य 500/-) एवं एक साड़ी (मूल्य 200/-) कुल योग 700/- का सहयोग प्रदान करने की व्यवस्था जन सहयोग से की गई।

यह कार्यक्रम गुरुकुल के कुलपति सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य (कोलकाता), गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य एवं दिलीप कुमार जिज्ञासु तथा गुरुकुल के कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय लोगों के पावन पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

ओ३म् साधना मण्डल द्वारा वेद प्रचार

नेहा मोगा/वीर सिंह
सिरसा (हरियाणा)।

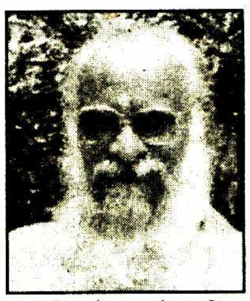

ओ३म् साधना मण्डल के संस्थापक व अध्यक्ष स्वामी दयानन्द विदेह ने आर्य समाज कालांवाली के साप्ताहिक सतसंग में ओज-पूर्ण प्रेरणाप्रद, उपदेश किया। उन्होंने बताया कि यज्ञ का प्राण सुगन्धि है; अर्थात् जीवन में यश का वर्धन हो तो यज्ञ सार्थक है। स्वाहा अर्थात् जहां त्याग और बलिदान की भावना की वृद्धि होती है, ऐसा जीवन जीने वाला अमर हो जाता है। त्रिलोक चंद मोंगा के निवास पर आयोजित सायंकालीन सत्संग में स्वामी जी ने "भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिः' के मन्त्र के आधार पर सभी को उद्‌बोधित किया कि जो जैसा देखता है तथा जो जैसा सुनता है, उसका चिंतन वैसा ही हो जाता है। अतः मनुष्य को सुविचार के साथ अपने आचार, व्यवहार को शुद्ध व पवित्र बनाना चाहिए, ऐसा वेद का आदेश है। इसी क्रम में एक पारिवारिक सतसंग स्वामी जी द्वारा भिवानी में भी सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में प्रेम मोगा, सूरत सिंह पूनिया (पी०एन०बी०), त्रिलोक चंद सचदेवा (प्रधान आर्य समाज), राज कुमार आर्य (सी०ए०) ईश कुमार सचदेवा आदि महानुभावों का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

जन्मोत्सव मनाया

बहादुरगढ़। आत्मशुद्धि आश्रम में मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी का 78वां जन्मदिवस, वृहद यज्ञ एवं भजन संध्या के साथ पतंजलि योगधाम, ज्वालापुर के स्वामी दिव्यानन्द के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

वेदपारायण यज्ञ, प्रवचन व संस्कारादि के लिये सम्पर्क करें

आचार्य राजेन्द्र जिज्ञासु

(वैदिक प्रवक्ता)

Mob.: 09837344018, 09457948628

नोट- कृपया ३ माह पहले सूचित करें

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

मूल्य ६०/- किलो

रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित

शुद्ध हवन सामग्री

हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता - उपदेश विभाग

कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५९२२-२६३४१२

गुर्दे की पथरी बन जाती है पानी

मात्र तीन खुराक पीने वाली दवा से गुर्दे की पथरी पानी बनकर निकल जाती है। पथरी दुबारा न हो इसके लिए वायोकैमिक दवा एक माह तक और खाने को दी जाती है। ऑपरेशन के हजारों के खर्चे से बचें और पथरी का रोग दूर करें। सैकड़ों रोगी ठीक हो चुके है। आप भी स्वजनों, परिजनों ईष्टमित्रों को यह सन्देश दीजिए। सम्पूर्ण औषधि हेतु वेद प्रचाराचार्थ सहयोग राशि 500/- मात्र)

●दयाराम वेदपथी, वैदिक क्रान्ति कुज-3, पटेल नगर, बदायूं (उ.प्र.) मोबा. : 09837884200

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2014 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यः उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं हैं। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए 31 दिसम्बर 2013 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटो आदि के साथ अपने दूरभाष (चल) एवं पूर्ण पते सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद

देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)

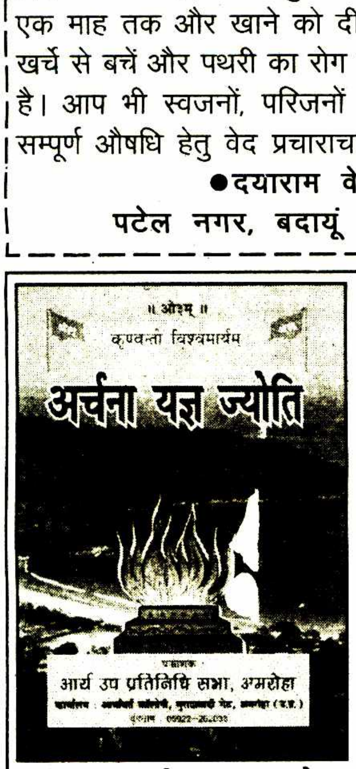

लागत से भी आधे मूल्य पर केवल प्रचारार्थ बिक्री हेतु उपलब्ध है

अर्चना यज्ञ ज्योति

(पंच महायज्ञ सहित)

रंगीन आकर्षक आवरण/उत्तम क्वालिटी पेपर/ पृष्ठ-48/ मूल्य- रु. 7/- (600 रुपये सैंकड़ा)

आज ही अपना आदेश इस पते पर भेजें-

डॉ. अशोक कुमार आर्य- मंत्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) दूर.- 05922-262033, चल.- 09412139333 & 08273236003
-हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता (05922.263412)

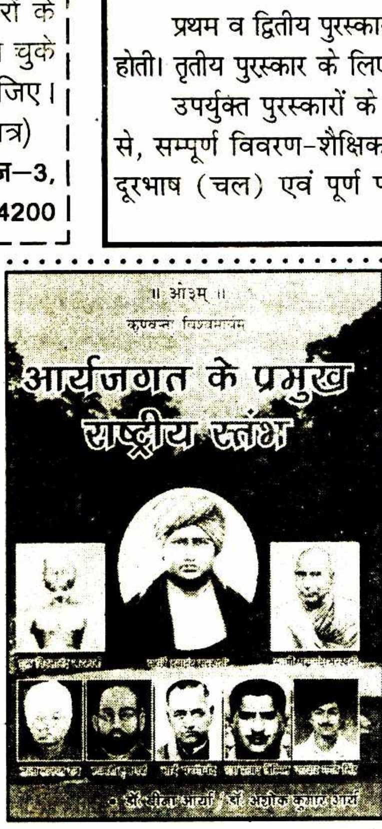

शीघ्र प्रकाश्य

आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक व उपसभा के मंत्री
डॉ. अशोक कुमार आर्य
एवं
डॉ. बीना आर्या
द्वारा लिखित तथा
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा
द्वारा प्रकाशित
दो उत्कृष्ट पुस्तकें

रंगीन आकर्षक आवरण/उत्तम क्वालिटी युक्त पेपर/ पृष्ठ-72/ मूल्य : एक प्रति- रु. 25/-

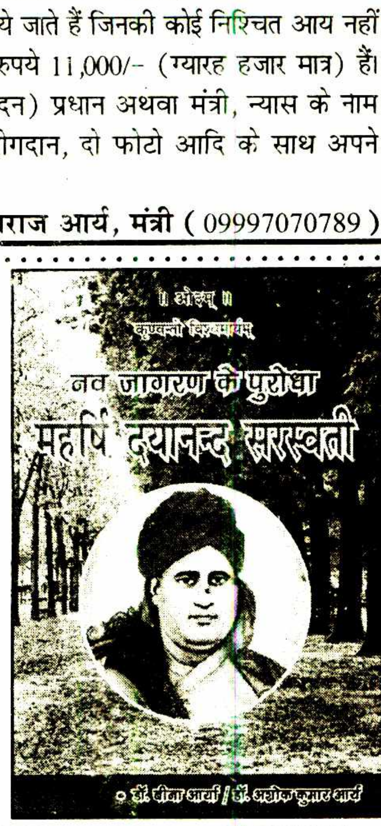

इस संग्रहणीय पुस्तक में आर्यजगत की कुछ प्रमुख विभूतियों का उल्लेख है जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना सर्वस्व होम कर दिया।

इस संग्रहणीय पुस्तक के अन्तर्गत भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती के गौरवपूर्ण योगदान का संक्षिप्त विवेचन है।

वैदिक राजधर्म से शिक्षा लें वर्तमान राजनीतिक दल

हमारे वैदिक ग्रन्थों में राजधर्म के विषय में विस्तर से प्रकाश डाला गया है। ऋषियों ने चिन्तन किया है कि राजा अथवा शासक कैसा होना चाहिए। उससे अपेक्षा की गयी है कि वह राज्य की रक्षा व देखरेख न्यायपूर्वक करे।

ऋग्वेद के मण्डल-३ सूक्त-३८, मंत्र-६ **'त्रीणिं राजाना विदथें पुरुणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।।'** में ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिल के सुखप्राप्ति और विज्ञानवृद्धि कारक राजा प्रजा के सम्बन्ध स्वरूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा, राजार्यसभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजासंबन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातंत्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

इसी प्रकार अथर्व वेद के विभिन्न मंत्रों में भी वर्णित है कि उस राजधर्म को तीनों सभा संग्रामादि व्यवस्था और सेना मिलकर पालन करें। सभासद और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदों को आज्ञा दे कि हे सभा! जो योग्य मुख्य सभासद तू मेरी सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन कर और जो सभा के योग्य सभासद हैं, वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें। इसका अभिप्राय यह है कि किसी एक को स्वतंत्रा राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए। वरन् राजा को सभापति, उनके अधीन सभा, सभा के अधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजा व सभा के अधीन रहे। यदि ऐसा न हो तो प्रजा से स्वतंत्र और स्वाधीन राजवर्ग प्रजा का नाश कर सकता है। ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि जैसे सिंह हृष्ट-पुष्ट पशु को मारकर खा जाते हैं, वैसे ही एक उन्मुक्त स्वतंत्र राजा प्रजा का नाश कर देता है।

यह चिन्तन राजसत्ता में शक्ति-पृथक्करण और रोक तथा संतुलन के सिद्धांत का निर्देश देता है। वस्ततः जब भी ऐसे निर्देशों की अवहेलना की जाती है तो तंत्र लोकहित के स्थान पर स्वहित की ओर अग्रसर होने लगता है और निरंकुशता या अराजकता जैसी स्थिति उत्पन्न होने लगती है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह अपेक्षा की जाती है कि शासन लोक-कल्याणकारी राज्य की स्थापना और उसके संरक्षण पर पूर्णतः ध्यान देगा, किंतु प्रायः देखने में आता है कि चुनावी घोषणा पत्र एवं वायदों पर सरकारें खरी नहीं उतरतीं, अथवा शासन-तंत्र सत्ता के मद में जनता के हितों की अनदेखी और जनमत की अवहेलना में भी संकोच नहीं करता। हाल ही में हुए विधानसभा के चुनाव 'भाजपा' तथा 'आप' की जीत- विषयक कई महत्वपूर्ण सन्देश स्वतः ही दे जाते हैं। यदि समय रहते राजनीतिक दलों ने मंथन नहीं किया, तो दिल्ली में जो उनकी दुर्गति हुई है, उससे अन्यत्र भी बचा नहीं जा सकता।

जनवाणी

बलि प्रथा का अंत हो

महोदय,

हमारे समाज में देवी-देवताओं की पूजा परम्परागत धर्म है। इसके साथ ही 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' के अनुसार सब जीवों पर दया का भाव रखना मानव का यथोचित कर्त्तव्य है। देवी-देवताओं की पूजा के नाम पर पशु-पक्षियों का वध करना अवैदिक है। अपराधी को जीवन दण्ड देने का प्रावधान है किन्तु निरपराधी को दण्ड दिया जाना अनैतिकता की चरम सीमा है। यह पूर्णतः अंधविश्वास है कि कोई देवी-देवता किसी का वध करने से प्रसन्न होते हैं। मनुष्य स्वाद के दृष्टिकोण से बलि चढ़ाता है और कल्याणकारी देवी-देवताओं को भी बदनाम कर डालता है।

अतः सभी लोगों को यह चाहिए कि बलि प्रथा को समूल विनष्ट करने में अपनी सारी शक्ति लगा दें और कहीं भी ऐसा न होने दें। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, अर्पित हो मेरा मनुजकाय'' के आधार पर भी हमें बलि प्रथा को अनैतिक समझकर इसके समापन में संपूर्ण सहयोग देना चाहिए। सामाजिक संगठन भी इसके प्रति आगे आयें। हम सब जागरूक होकर ऐसी निकृष्ट प्रथा को मिटाने का संकल्प लें- यही आग्रह और अनुरोध है।

धर्मशास्त्रों के अनुसार 'अहिंसा परमो धर्मः' तथा 'अहिंसा परम तपः' ही हमें बलि प्रथा को न करने की प्रेरणा देती है। वास्तव में यह प्रथा अनुचित है यानि मांस भक्षियों ने यह प्रचलन शुरू कर दिया। अपनी संतान के सुख के खातिर दूसरे की संतान की बलि देना क्या यही मानवता है? राष्ट्रपिता महात्मा गांधी 'अहिंसा परमो धर्मः' को जीवन में उतार कर अमर हो गये। किसी भी जाति धर्म संप्रदाय व मजहब में बलि प्रथा या कुर्बानी की चर्चा बेबुनियाद है। कोई धर्म शास्त्र इसके प्रति अनुमति नही देता। पहले बलि या कुर्बानी के सच्चे अर्थ को समझने की जरूरत है। इस बलि प्रथा को जबरन नहीं, प्रेम से समझाकर दूर करें। हारकर नहीं बल्कि नम्रता से झुककर मुकाबला करें। जुल्म और अत्याचार की इस प्रथा का डटकर सामना करें। इस पर विचार करें। गंभीरता से सोचकर रचनात्मक कदम उठायें।

सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी,
कुदरा कैमूर (बिहार)

हम कहां जा रहे हैं?

डॉ० सहदेव वर्मा

वेद मंत्र का एक भाग है- ''जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविः''- अर्थात् जागरूक नेता ही जनता (देश) की रक्षा कर सकता है। वास्तव में विवेकशील, सचेत नेता ही देश की नौका का खेवन हार है। राष्ट्र को संकटों से उबार कर सुरक्षित दिशा देना सतर्क नेता का केवल काम ही नहीं, अपितु कर्तव्य भी है। पर आज तो सब कुछ विपरीत सा दिखाई दे रहा है। कभी नाव जर्जर दिखाई देती है, तो कभी नाविक के हाथ पैर लड़खड़ाने लगते हैं। नाव पर बैठे यात्रियों का विश्वास भी डगमगाने लगता है। आखिर यह स्थिति क्यों आभासित होती है यदि आर्यसमाज की आधुनिक मानसिकता का विश्लेषण करें तो स्थिति कुछ स्पष्ट हो सकेगी। सुधी पाठक इस तथ्य से अवगत हैं कि बीसवीं शताब्दी के तीसरे व चौथे दशक तक आर्यसमाज का रूतबा इसलिए प्रशंसनीय था क्योंकि तब आर्यसमाजी ऋषि दयानन्द के केवल अनुयायी ही नहीं, बल्कि अनुगामी भी थे। उनकी कथनी और करनी में भेद नहीं था। तब आर्यसमाज के लिए क्रान्तिकारी संस्था का विशेषण लगता था। क्रान्ति का अर्थ होता है विचारों में आमूल चूल परिवर्तन। हम क्रान्तिकारी से मात्र सुधारवादी हो गये। सिद्धान्तवादी से समझौता वादी तथा व्यवहारवादी से आदर्शवादी हो गये। उन्नीसवीं शताब्दी तक अनेक महापुरूष सिद्धान्त तो प्रस्तुत करते थे, किन्तु आवश्यक हो तो उन्हें समझौता करने में भी कोई गुरेज नहीं था। ऋषि दयानंद के सामने भी एक बार यह स्थिति आई थी। जब उन्होने ब्रह्म समाज की ओर हाथ बढ़ाया था किन्तु तब ऋषि ने सिद्धान्त को ही महत्व दिया, समझौते को नहीं।

एक समय था जब आर्य समाज ठोस यथार्थवाद अर्थात् जीवन की व्यावहारिकता व वस्तुस्थिति पर जोर देता था केवल आदर्श की आँधी में उड़ना उसने नहीं सीखा था- ***"भले बुरे के फर्क ने बस्ती उजाड़ दी। मजबूर हो के हर किसी से मिलने लगे हम।।"***

हम जिन बुराइयों को दूर करना चाहते थे, वे बराबर बढ़ती जा रही हैं। आर्यसमाज भी बढ़ा अवश्य, परन्तु भ्रष्टाचार, बेईमानी और पाखण्ड उससे भी तेजी से बढ़े। आर्यसमाज ने हर दिशा और दृष्टि से कुरीतियों पर चोट की। आर्य समाज ने कुछ ऐसे कार्यक्रमों का बीड़ा उठाया था, जिनके प्रचार से मानव समाज को एक नया प्रकाश और प्रेरणा मिली, जिनमें मुख्य थे- शिक्षा, शास्त्रार्थ और शुद्धि। शिक्षा तो किसी न किसी रूप में आज भी आर्य समाज के पास है परन्तु उसका भी व्यवसायीकरण हो गया है। राजा ओर रंक, अमीर और गरीब, धनी ओर निर्धन आज एक ही आसन पर बैठकर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। आधुनिक सरकारों ने ''आरक्षण'' का एक नया शोशा छोड़कर इस भेदभाव की खाई को और गहरा तथा चौड़ा कर दिया है। जहां तक शास्त्रार्थ और शुद्धि का प्रश्न है ये शब्द तो नई पीढ़ी के लिये शब्दकोश की वस्तु होकर ही रह गये हैं। पर इसके लिये उत्तरदायी कौन है?

ऊपर हमने अनुगामी तथा अनुयायी शब्दों का प्रयोग किया है। आज हम ऋषि के अनुगामी न होकर मात्र अनुयायी ही रह गये हैं। यद्यपि शब्दकोश की दृष्टि से दोनों शब्द समानार्थक हैं, परन्तु वैचारिक दृष्टि से दोनों में अन्तर है। अनुगामी वह है जो गृहति सिद्धान्तों, मर्यादाओं और नियमों को जीवन में ढाल लेता है अनुयायी वह है जो भीड़ में शामिल होकर जय जयकार कर अपनी उपस्थिति दर्ज करता है। अनुगामी कुछ ही होते हैं, पर अनुयायी असंख्य।

महर्षि के अनुगामी थे गुरुदत्त, लेखराम, श्रद्धानन्द और हंसराज आदि। स्वाध्याय में लगे तो जर्मनी फ्रांस और इंग्लैण्ड के विद्वान हिल गये। प्रचार में लगे तो विधर्मियों के विश्वास डोल गये और निरूत्तर होने पर छुरे को हथियार बनाया। शुद्धि में लगे तो चोटी और जनेऊ की मांग बढ़ी। शिक्षा में लगे तो डी०ए०वी० कालिज, कन्या पाठशाला और गुरूकुलों के जाल बिछा दिये। राजनीति में गये तो लाठी गोली खाकर फांसी के फन्दों पर झूल गये और विदेशी सरकार की चूलें ढीली कर दीं।

धर्मवीर पं० लेखराम तो धर्म प्रचार के सिवाय कुछ सोचते ही न थे। प्रचार की धुन ऐसी कि अभी बाहर से घर आये ही थे, एकमात्र बेटा सख्त बीमार था- भोजन करने बैठे ही थे, कि तभी एक तार आया उसे पढ़ने लगे-

"लिफ़ाफ़ा हाथ में लाकर
दिया जिस वक्त माता ने,
लगे झट खोल कर पढ़ने
दिया था छोड़ खाने को।
लिखा था उसमें कुछ हिन्दु
मुसलमां होने वाले हैं,
जो आ सकते तो तो जल्दी
चले आओ बचाने को।।

फिर क्या था, धर्म के उस दीवाने ने खाना छोड़ दिया, बिस्तर तो बंधा हुआ था ही, फौरन चल दिया। माता ने कहा ''खाना तो खा लो। बेटा सख्त बीमार है कम से कम उसे देख तो लो''। धर्मवीर ने कहा माता यहां मेरा एक बेटा बीमार है पर वहां मेरे कई बेटे मुसीबत में हैं पहले उनकी सुध तो ले लूं। सन् 1960 के लगभग की घटना है निश्चित तिथि ध्यान नहीं, पूना में सनातन धर्म की ओर से एक ''अश्वमेध यज्ञ'' की घोषणा की गई, जिसमें अश्व (घोड़े) को काटकर (बध करके) आहुति देने की योजना थी। जब यह समाचार आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, जो आर्यसमाज के सर्वमान्य विद्वान नेता थे, को मिला, तो वे वहां पहुंच गये और खुले तौर पर घोषणा की कि 'अश्वमेध' का अर्थ यदि घोड़े की आहुति यज्ञ में देना है। ये बात आप लोग (विपक्षी विद्वान पण्डितों से तात्पर्य) किसी भी ऋषि प्रणीत प्राचीन ग्रन्थ या वेद के आधार पर सिद्ध कर दें, तो मैं इस निर्णय को मान ही नहीं, लूगां, वरन् आर्यसमाज भी इस मान्यता को स्वीकार कर लेगा। (यह समाचार उ०प्र० आर्य प्र०नि० सभा के तत्कालीन प्रमुख पत्र ''आर्यमित्र'' में प्रकाशित हुआ था)। अन्ततः यज्ञ के आयोजकों ने अपना यह इरादा बदल दिया।

मैनें इस घटना का आचार्य जी की उपस्थिति में ही कई सम्मेलनों में जिक्र किया। परन्तु आचार्य श्री ने हर बार यही कहा कि सत्पथ पर आरूढ़ रहकर क्या भय क्या शंका? पर अब हम कहां से कहां चले गये?

वह समय था जब आर्य समाज के नेता सिद्धान्तों से लबरेज रहकर किसी भी सैद्धान्तिक चुनौती का खम ठोंककर सामना करने के लिए कटिबद्ध रहते थे। पर अब कौन कहे? किससे कहे? और क्या कहे? अब तो समाज मंदिरों की चार दीवारी में बैठकर यज्ञ करके साप्ताहिक सत्संग की इतिश्री कर ली जाती है। काश वे दिन फिर लौट सकें, अब तो यह स्थिति है-

कोई मर्ज हो तो दवा करें,
कोई बला हो तो दुवा करें।
जब दवा दुवा का असर न हो
तो बताइये कोई क्या करें?

अतः यह विचारणीय है कि आखिर-हम कहां जा रहे हैं?

-24/4, बिशन सरूप कॉलोनी, पानीपत-132103
फोन- 0180-2643700

हम अपने जीवन की मलिनता हटाएं

डॉ० अशोक अ र्य

प्रभु की सहायता प्राप्त कर हम अपने अन्दर के काम, क्रोध आदि दुष्ट प्रवृत्तियों को दूर करें। सदा दिव्य व उतम कर्मों में लगे रह कर जीवन को शुद्ध करें तथा जीवन में जो जो भी बुराईयां हों उन्हें दूर करने का सदा प्रयत्न करें। यजुर्वेद का यह मन्त्र इस पर ही प्रकाश डाल रहा है।

युष्माऽइन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रेक्षामि। दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वो ऽशुद्धाः पराजधनुरिदं वस्तच्छुन्धामि।। यजुर्वेद1.13।। इस मन्त्र में सात बातें बताई गई हैं:

1. हम अपने कामादि का नाश करें-- जीवन में काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार आदि अनेक शुत्र होते हैं इन शत्रुओं के वश में रहने वाला जीव सदा ही विपत्तियों से घिरा रहता है। लड़ाई, झगड़ा, कलह, क्लेश उसके जीवन का आवश्यक अंग बन जाते हैं। उसका जीवन नरक के समान बन जाता है इसलिए इन सब को जीवन के शत्रु माना गया है। यह मन्त्र अपने उपदेश के आरम्भ में यह ही कह रहा है कि हम इन शत्रुओं का नाश करें, इन का संहार करें। इन शत्रुओं को हम अपने जीवन में न आने दें।

मन्त्र कहता है कि जीव तू व्रत्रतूर्य बन। अपने अन्दर के शत्रुओं के साथ युद्ध करते हुए इन सब का संहार करदे। यह बुराईयों के संहार के रूप में तू एक प्रकार का यज्ञ कर रहा है इस यज्ञ की अग्नि कभी बुझने न दे। इसमें सफलता प्राप्त कर ही विश्राम करना। जब तक सफलता नहीं मिलती, इस युद्ध को, इस यज्ञ को करते ही रहना।

जिन प्राणियों ने यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के मन्त्र संख्या बारह के अनुरूप कार्य करते हुए अपने जीवन को उत्तम व पवित्र बनाया, ऐसे प्राणियों को प्रभु ने सात्विक श्रेणी, उत्तम श्रेणी दी। इस प्रकार ही जो प्राणी अपने जीवन को पवित्र बनाने में सफल रहते है। ऐसे प्राणियों को प्रभु कामादि शत्रुओं से लड़ने तथा उनका संहार करने की शक्ति देता है। ऐसे व्यक्ति ही सात्विक कहलाते हैं तथा ऐसे प्र णियों की श्रेणी का नाम ही सा त्वक श्रेणी होता है। इस प्रकार के ' ी कामादि से तब तक निरन्तर लड़ते रहते हैं, जब तक कि वह इन दोषों का नाश करने में सफल नहीं होते।

2. प्रभु की सहायता से ही हम सफ़ल होते हैं– हम कामादि शत्रुओं से लड़ने की शक्ति भी प्रभु से ही प्राप्त करते हैं। इसलिए उस परमैश्र्यशाली प्रभु का वरण करना, उसका अशीर्वाद पाने का यत्न, उसकी निकटता पाने का प्रयास हम निरन्तर करते हैं और यह आवश्यक भी है, क्योंकि उसकी सहायता के बिना हम सफल तो क्या होगें, कुछ कर भी न सकेंगे।

3. प्रभु कृपा से ही हम शुद्ध होते हैं– कामादि शत्रुओं से लड़ने के लिए हमारे अन्दर शुद्धता का, पवित्रता का होना आवश्यक है। जब हम स्वयं ही शुद्ध पवित्र नहीं हैं, जब हम स्वयं ही कलुषित कार्य कर रहे हैं तो हम कलुषित्त के साथ लड़ कर कैसे विजयी हो सकते हैं। इसलिए हमें पहले अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाना होता है। ताकि हमारी शक्ति हमारे शत्रु से अधिक हो सके तथा फिर जब हम इन शत्रुओं से लड़ेंगे तो निश्चय ही सफल भी होंगे। कहा गया है अपने ऊपर जल छिडको, स्नान करो तो तुम शुद्ध हो जावोगे। जल शुद्धि का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार ही प्रभु की समीपता को पाना, उस प्रभु का वरण करना, उसका अशीर्वाद प्राप्त करना भी शक्ति का प्रतीक है। जब तुम प्रभु का वरण करने में सफल हो जाते हो तो तुम शक्तिशाली हो जाते हो, प्रत्येक अंग में शक्ति का संचार हो जाता है तथा इस युद्ध में तुम्हारी विजय निश्चित हो जाती है। इसलिए हम प्रभु की सहायता प्राप्त कर अपने जीवन को शुद्ध बनावें।

4. हम केवल यज्ञ शेष का ही सेवन करें– मानव सदा पका हुआ भोजन ही करता है। कच्चा भोजन वह नहीं करता क्योंकि ऐसा भोजन सुपाच्य नहीं होता। कभी वह कच्चा भोजन कर भी लेता है तो उसको उल्टी, टट्टी या पेट दर्द आदि कई प्रकार की व्याधियां हो जाती हैं, यह क्यों होती हैं? क्योंकि उसने प्रभु के बनाए हुए नियम को तोड़ते हुए अपने शरीर को तानाशाह बनाने का यत्न किया। इस दुःसाहस के लिए प्रभु ने उसे दण्डित करते हुए उसके पेट में दर्द आदि कुछ व्याधि पैदा कर दी। यह व्याधि उसे केवल कष्ट देने मात्र के लिए पैदा नहीं की अपितु इसलिए भी की कि उसे पता चले कि उसने गलती की है तथा भविष्य में इस प्रकार की गलती को पुनः नहीं करना। इसलिए प्रभु उपदेश करते हैं कि हे मानव यज्ञ की अग्नि को ही अपने में अवशिष्ट कर। अर्थात् यज्ञ करने के पश्चात् जो शेष बचता हैं, उसे ही तूं उपभोग कर। संसार की वस्तुओं पर आश्रित न रह कर यज्ञ शेष पर ही आश्रित रह। इस सब का भाव यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसे हम यज्ञ पर, परोपकार के कार्यो पर व्यय करें और इस प्रकार से दूसरों की सहायता करने के पश्चात् ही शेष बचे पदार्थ को हम अपने हित के लिए प्रयोग करें।

5. हम शुद्ध हो प्रभु का संगतिकरण करें– मन्त्र का उपदेश है कि हम प्रभु से संगतिकरण करें, हम प्रभु का साथ बनावें, हम प्रभु से निकटता बनावें, किन्तु कैसे? हम प्रभु का संगतिकरण किस प्रकार कर सकते हैं। इस पर भी मन्त्र प्रकाश डालते हुए हमें कुछ मार्ग बताता है।

मन्त्र बता रहा है कि हम सर्व प्रथम अपने को अथवा अपनी आत्मा को शुद्ध करें, पवित्र करें इस शुद्धत व पवित्रता लाने के लिए यह निश्चित है कि हम अपने प्रयोग में उपभोग में आने वाले प्रत्येक पदार्थ के प्रयोग के लिए इस भावना को बनाए रखें कि पहले हमने यज्ञ करना है तथा फिर यज्ञ शेष को ही अपने लिए प्रयोग करना है ऐसा करने से ही तुम्हारी शुद्धि होगी, ऐसा करने से ही प्रभु से संगतिकरण होगा। ऐसा करने से ही उस पिता की संगति, समीपता, निकटता व साथ प्राप्त होगा।

6. आत्मशुद्धि के लिए कर्म करो– हमने अपनी आत्म शुद्धि करना है क्योंकि आत्मशुद्धि के बिना प्रभु का सान्निध्य प्राप्त नहीं हो सकता। हम जब प्रभु की निकटता पाने का यत्न कर रहे है तो हमारे लिए आत्म शुद्धि आवश्यक है। जब तक आत्मशुद्धि नहीं हो जाती, तब तक हम प्रभु के निकट नहीं जा सकते। इसलिए हम यन्त्र पूर्वक आत्मशुद्धि के कार्यो को; विधियों को, साधनों को अपनाते हैं। जब हम अपने आप को दिव्य कार्यों में लगा देगें, उत्तम कार्यों के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देंगे तो हमारे अन्दर की सब मलिनताएं, सब दोष, सब गन्दगी धुल जावेगी और हम शुद्ध व पवित्र हो प्रभु का आशीर्वाद पान के अधिकारी बन जायेंगे।

7. प्रभु सब का शोधन करते हैं– जब हम प्रयत्न पूर्वक अपना शोधन करने में जुट जाते हैं, जब हम केवल यज्ञ शेष को ही ग्रहण करते हैं, जब हम परोपकार के कार्यों को अपनाते हैं तो प्रभु कहते हैं कि मेरे लिए फ़िर सम्भव ही नहीं है कि हे जीव! मैं तुझे दोष मुक्त न कर सकूं अर्थात् अब मैं तुझे शुद्ध करता हूँ, पवित्र करता हूँ। अब तू पूर्ण संस्कारित हो चुका है अब मैं तुझे मेरी संगति में आने का, मेरे निकट आने का अधिकार देता हूँ।

–104, शिप्रा अपार्टमेंट
कौशाम्बी, गाजियाबाद
मो0– 09718528068

कवि विशेषांक

आर्यावर्त केसरी की योजना है कि आर्यजगत से संबद्ध विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर पृथक-पृथक विशेषांक प्रकाशित किये जाएं। इन विभिन्न विशेषांकों की श्रृंखला में आर्यावर्त केसरी द्वारा **'कवि-विशेषांक'** का प्रकाशन पिछले दो अंकों में क्रमशः किया गया है। इस विशेषांक की अगली कड़ियां भी शीघ्र ही क्रमशः प्रकाशित की जाएंगी।

–सम्पादक

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

वैवाहिक कॉलम रिश्ते ही रिश्ते

वर चाहिए

◆मेरी पुत्री देविका आयु 21 वर्ष, 5'' एम.ए. उत्तरार्द्ध (संस्कृत), कम्प्यूटर डिप्लोमा, रंग सांवला, शुद्ध शाकाहारी, सुन्दर, सुशील, व्यवहार कुशल के लिए समकक्ष शिक्षित, स्वनिर्भर, सेवारत या व्यावसायी वर चाहिए। जाति बंधन नहीं। **सम्पर्क करें- सुरेश चन्द्र आर्य, बांगरमऊ, जिला उन्नाव (उ.प्र.) दूरभाष: 07404166131**

वधू चाहिए

◆मेरे पुत्र आशीष कुमार एडवोकेट, आयु 30 वर्ष 5'-5'', एम0ए0 एल.एल.बी., साफ रंग हेतु सुन्दर, सुशील सुशिक्षित, शाकाहारी, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए। **सम्पर्क करें- नौबहार सिंह, ग्रा. व पो.- सीर वासुचन्द, अफजलगढ़ (बिजनौर)।** 7520098783, 9411855564

◆मेरे पुत्र गजेन्द्र सिंह, आयु 31 वर्ष 5'-8'', एम.कॉम., बी.एड., एल.एल.बी., रंग सांवला, व्यवसाय अधिवक्ता, इलेक्ट्रॉनिक व एल.आई. सी. का कार्य, मासिक आय 12,000/- रुपये हेतु उत्तम सोच विचार व आचरणयुक्त वधू चाहिए। **सम्पर्क करें- डॉ. राम नरेश सिंह, रामा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, गांधीनगर, कंजरी सराय, मुरादाबाद-२४४००१ (उ.प्र.)।** 09758167211

आर्यावर्त केसरी-वैवाहिक प्रपत्र

आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 उ.प्र.

आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में प्रकाशनार्थ विवरण इस प्रपत्र पर हिन्दी में स्वच्छ एवं स्पष्ट शब्दों में भरकर भेजें।

ये विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित होंगे तथा इनका प्रयोग आर्यावर्त केसरी वैवाहिक ब्यूरो द्वारा विवाह योग्य युवक/युवतियों के सम्बन्ध में जानकारी देने के लिये भी किया जाता है।

१. युवक/युवती का नाम........................
२. पिता का नाम..............................
३. पता.......................................
....
४. आयु........ ५. लम्बाई....................
६. रंग-रूप....................................
७. शिक्षा.....................................
८. अन्य योग्यता/अभिरुचि.......................
९. व्यवसाय/नौकरी विवरण.......................
....
१०. आय (स्पष्ट लिखें)...........................
११. जन्मपत्री की आवश्यकता हाँ/नहीं...............
१२. किस प्रकार का जीवन साथी चाहते हैं.............
....
१३. पारिवारिक विवरण............................
१४. अन्य......................................

नोट : यदि वैवाहिक विज्ञापन में पता न देकर केवल मोबाइल/दूरभाष नम्बर ही देना हो तो अवगत कराएं। अन्य किसी विवरण के लिए पृथक पृष्ठ पर सूचनाएं अंकित कर दें।

दिनांक.... अभिभावक के हस्ताक्षर

दूरभाष :.......................................

क्यों खण्ड-खण्ड उत्तराखण्ड?

देव नारायण भारद्वाज

भारतवर्ष के उत्तरी भाग में विश्व के विशालतम पर्वत हिमालय की सर्वोच्च पर्वत श्रृंखलाओं के अंचल में स्थित भूभाग को उत्तराखण्ड कहा जाता है। इसी क्षेत्र मे गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ एवं केदारनाथ संज्ञक प्रसिद्ध चारधाम सर्वमान्य तीर्थ के रूप में पूजित किये जाते हैं। कोई स्थान विशेष स्वयं तीर्थ नहीं होता है; क्योंकि वह नौका की भाँति किसी को दुःख सागर से पार नहीं कर सकता है- तार नहीं सकता है। हाँ, उस स्थान विशेष की हरीतिमा पूर्ण दृश्यावली, जड़ी, बूटी, खनिज व जलवायु सम्बन्धी ऊर्जावान प्रभावकारी भूमिका और वहाँ पर पहुँचकर त्याग, तपस्या, एवं साधना के द्वारा सन्त-महात्माओं में उत्पन्न वेद-विद्या के तेजोमय स्वरूप का उपदेश मानव को संसार सागर से पार उतरने की प्रेरणा प्रदान करने से हम उसे तीर्थ की गरिमा प्रदान कर देते हैं। इसलिए यजुर्वेद (16. 61) हमारा मार्गदर्शन करता है। यथा-

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाम् सहस्रयोजनेऽव ध न्वानि तन्मसि॥

अर्थात् जो हमें दुःख और अज्ञान के सागर से पार करा दें, वह तीर्थ होता है। हमारे माता-पिता, पितरजन, आचार्य, वेद, सत्य, सत्संग, ईश्वरोपासना एवं नौका हमारे लिए तीर्थ होते हैं, सब मनुष्यों का धर्म है कि वे इन तीर्थों का आश्रय लेकर सुखदायी वेदज्ञान को ग्रहण कर उसे सम्पूर्ण विश्व में फैलायें। सामवेद (मन्त्र 143) भी कुछ ऐसा ही उपदेश हमारे लिए करता है।

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत।

अर्थात् पर्वतों की गुफाओं में तथा नदियों के संगम पर पहुँचकर विप्रगण अर्थात् वे लोग जो अपनी पालना एवं पूर्णता के निमित्त विशेष रूप से सचेष्ट हैं, जाकर बुद्धि व ज्ञान को प्राप्त करते हैं। ऋग्वेद (2.7.3) के अनुसार- "विश्वास उत त्वया वयं धारा उदन्या इव। अति गाहेमहि द्विषः।" सज्जन भक्त की भावना यही होती है कि दुर्जन उससे दूर हो जायें तथा दुःख एवं दोष भी उसी प्रकार दूर हो जायें, जिस प्रकार जल सभी अशुद्धियों को दूर कर देता है। इसके लिए उसे प्रार्थना एवं पुरुषार्थ निरन्तर करते रहना चाहिये।

हर वेदानुयायी अपनी दैनिक प्रार्थना-साधना 'सन्ध्या' के द्वारा धरातल से उठाकर उत्तराखण्ड की पंचकोशीय यात्रनित्य करता है। वह अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोशों को पार करके आनन्दमय कोश तक पहुंचता है। ये कोश क्रमशः शरीर-प्राण- हृदय-मस्तिष्क एवं ब्रह्ममूर्धा के रूप में समझे जा सकते हैं। यह विनियोग बिना स्पष्टीकरण के विचित्र लग सकता है किन्तु विज्ञान सम्मत है। धरातल से उठकर ब्रह्ममूर्धा के उत्तराखण्ड पर पहुंचकर ही मानव को आनन्द का उपस्थान प्राप्त होता है, और हमारा मन्त्र-मनन सार्थक हो उठता है।

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम्॥

अर्थात् हम अन्धकार से ऊपर उठें; परमात्मा के आनन्दमय ज्योति स्वरूप का अनुभव करते हुए और ऊपर उठें। देवों में देव-महादेव-सकल जगत के उत्पादक सूर्यों के महासूर्य परमात्मा को प्राप्त करके उत-से, उत्तर-से, उत्तम सद्गुण सम्पन्न श्रेष्ठ हो जायें, मानव-शरीर को प्राण ऊपर की ओर उठाते रहते हैं, शरीर में स्थित आत्मा को हृदय की भावनायें अधिक ऊर्ध्वगामी गुणमय गतिशील बनाती हैं और मानस में विद्यमान विज्ञान उन भावनाओं में छटनी करके अकल्याणकारी कंकड़ों को हटा देता है। तभी ब्रह्ममूर्धा के स्तर पर पहुंचकर चिन्तन की चेतना से मानव आनन्द के उत्तराखण्ड पर पहुंच जाता है इस तेजोमय ज्ञानसूर्य-ब्रह्ममूर्धा की चिन्तना की विद्युत से जीवात्मा लोक व परलोक की सर्वोत्तम ऊँचाई पर आसीन हो जाती है। सृष्टि में उत्पन्न असंख्य योनियों को तीन प्रकार के प्राणि-समूह में रखा गया है। एक वृक्षादि है जिनके सिर धरती में धँसे रहते हैं, दूसरे पशु-पक्षी-कीट-पतंग आदि हैं जिनके सिर धरती के समानान्तर झुके रहते हैं। तीसरे मनुष्य ही हैं जिनके सिर ऊपर आकाश की ओर उठे रहते हैं। मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणी आहार-आराम-आरक्षा एवं सन्तति के चार पदों पर स्वाभाविक ज्ञान से अपने सम्पूर्ण चक्र को पूरा करते रहते हैं। मनुष्य को स्वाभाविक के साथ नैमित्तिक ज्ञान का वरदान भी प्राप्त है, जिसके बल पर वह धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के क्रमिक पदों पर चलने का पुरूषार्थ करता है। यदि वह मानवोचित आचरण को छोड़कर पशुवत व्यवहार करने लगता है तो उसका सिर कन्धों पर रहते हुए भी धरती की ओर झुक जाता है। वह समाज को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहता है।

भारत (प्रकाश में रत-व्यस्त) के हर मनुष्य को जहां एक ओर सात्विक ज्ञान ज्योति से परिपूर्ण मस्तिष्क रूपी उत्तराखण्ड प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर सर्वोच्च हिमाचल की देवभूमि रूपी उत्तराखण्ड भी उपलब्ध है, जिसका कण-एवं तृण-तृण मानव मस्तिष्क के उत्तराखण्ड को जाज्वल्यमान करता है। सामवेद (मन्त्र 143) की इसी प्रेरणा से विप्रवृन्द अपनी बुद्धि एवं ज्ञान-चेतना को प्रखर बनाते हैं। शरीर के देवलोक-मस्तिष्क रूपी उत्तराखण्ड में नई स्फूर्ति का सृजन करते हैं। जैसे मैदान में उद्देश्यपूर्ण शरीरिक श्रम अथवा व्यायाम हमारे दिमाग की रक्षा प्रणाली को सक्रिय कर देता है, वैसे ही पर्वतों की ऊँची-नीची चढ़ाई-उतराई की श्रम-साध्य यात्राओं से मस्तिष्क की कोशिकाओं का जिन्हें सीमन्त (न्यूरान) कहते हैं का नवनिर्माण होता है। जिनसे जोशिले उत्साह वृद्धि के संकेत प्रकट होते हैं, साथ ही वे अवांछित उत्तेजना को शान्त भी करते हैं। पर्वतों की प्राकृतिक छटा व दृश्यावली मानव-मेध को सुधावत शक्ति प्रदान करती है।

देवभूमि की गरिमा को गिराकर जब हम इसे भोग-भूमि की भंगिमा प्रदान कर देंगे तो हम देवताओं के आशीर्वाद की प्रतीक्षा करते रह जाते हैं, किन्तु वहां आ जाते हैं- दैत्यों के द्वारा प्रदत्त संताप एवं विलाप। इन मानवीय दुष्प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए जो चेतावनी दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स ने सन् 1977 में दी थी, वही आज सच हो रही है। कहा गया था कि हिमालय बीमार हो रहा है और अगर इसी तरह वनों का नाश होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति विनाश का ताण्डव देखेगी और हिमालय खत्म हो जायेगा। यदि हिमालय खत्म हो गया तो देश प्राकृतिक आपदाओं के तले दब जायेगा। लकड़ी और पत्थरों के भवनों को तोड़कर सीमेन्ट-कंकरीट का बना दिया गया है। पड़ाव व धर्मशालाओं को होटल के कमरों में बदल दिया गया है। देवार्चन, प्रकृति-दर्शन, पर्वत-पथगमन की तीर्थयात्राओं को पर्यटन में बदल दिया गया है।

पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा तथा मैग्सेसे पुरस्कार विजेता पर्यावरण विज्ञानी जलपुरूष राजेन्द्र सिंह कहते हैं कि चारधाम को तीर्थ ही बना रहने दें। इन्हें पर्यटन स्थल बनाये जाने के परिणाम केदार घाटी में आई भीषण आपदा जैसे ही होंगे। उत्तराखण्ड देश का गौरव है, इसके संरक्षण का दायित्व केवल प्रान्त का ही नहीं, सम्पूर्ण भारतवर्ष व केन्द्र शासन का भी है। देवभूमि में डायनामाइट के विस्फोट पर सड़कें बनायी जा रहीं हैं। बड़ी जल-विद्युत परियोजनाओं के लिए पहाड़ों में सुरंग बनाई जा रही है। इनके मलवा को नदियों में डालकर प्रवाह को अवरूद्ध किया जा रहा है। ऐतरेय ब्राह्मण ने तो यही कहा है- **"समुद्रपर्यन्तायाः पृथिव्याः एक राष्ट्रः" अराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्"** (यजु0 22.22) अर्थात् हमारे राष्ट्र में सब राजपुरूष महारथी और अरिदल विनाशकारी शूरवीर होवें। लोकप्रिय शासक जब अपने नागरिकों के मस्तिष्क रूपी उत्तराखण्ड को पाखण्ड प्रहार से बचायेगा, तभी हमारी भारतभूमि का सर्वोच्च उत्तराखण्ड खण्ड-खण्ड होने से बच पायेगा।

-'वरेण्यम' अवन्तिका (प्रथम), रामघाट मार्ग, अलीगढ़

आत्मीयता की प्रतिमूर्ति
पदम सिंह बिष्ट 'बाबू जी'

(१८ दिसम्बर पुण्यतिथि पर विशेष)

डॉ. बीना रुस्तगी

जीवन यात्रा में पूर्वजन्म के कर्मों के फलस्वरूप हमें अलग-अलग लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है, पर कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनका मिलना सुखद और प्रेरणादायक होता है। पूज्य श्री पदम सिंह बिष्ट जी, जिन्हें मैं बाबूजी कहती थी, का मिलन मेरे पूर्वजन्म के अच्छे कर्मों का ही परिणाम था। औसत लम्बाई, गौर वर्ण, छरहरी काया, गहरी आँखें, एक बार मिलने पर अपनेपन के सागर में डुबो लेने वाली आत्मीयता हर क्षण पितृवत्, वात्सल्यमयी भावबोध से प्रत्येक को अपना बना लेने वाले विलक्षण स्वभाव के बाबूजी की रिक्तता आज मन को साल रही है। 18 दि0 2011 को उनके महाप्रयाण की सूचना जब दूरभाष पर मिली, तो व्याकुलता की लहर दौड़ गयी। उस दिन मैं गुरूकुल चोटीपुरा समारोह में भाग लेने गई थी। गुरूकुल चोटीपुरा के प्रांगण [illegible] अश्रुपूरित नेत्रों के कारण ओझल [illegible] हो गया। बस किसी तरह स्वयं को संभालते हुए उसी दिन रात्रि को डॉ0 अशोक जी के साथ उनके अन्तिम दर्शनों को निकल पड़ी। रात्रि के एक बजे हम वल्दियाखाल पहुंचे। अमर आत्मा के निष्प्राण [illegible] को देखकर लगा कि जीवन कितना नश्वर है। मुझे याद आने लगा 4 नवम्बर [illegible] की सुबह ग्यारह बजे अम[illegible] में वल्दियाखाल मेरे पहुंचने पर, घर के बाहर बैठे बाबू जी का यह कहना कि "चलो आपने अच्छा किया कि आप आ गये मुलाकात हो गई।" मैं नहीं जानती थी कि यह अन्तिम मुलाकात है, पर हर बार से एक अलग-सा स्वर उनका जरूर था। बाबू जी को इस संसार से विदा हुए दो वर्ष हो गए हैं। आज का दिन मुझे बैचेन कर रहा है। मैं अतीत की गहराइयों में जाकर कुछ पन्नों को पलटने का प्रयास करती हूं तो मुझे याद आ रहा है कि जब मैं कुमायूँ विश्वविद्यालय से सन् 1985-86 एम0ए0 हिन्दी कर रही थी, तो उन दिनों कॉलेज में एक लड़की भोली-भाली गौर वर्णा चेहरे में सरलता, सौम्यता धारण किये मेरी एक सहेली के साथ अकेली छात्रावास में आती थी। कहीं न कहीं उसकी [illegible] और उसकी सादगी मुझे आकर्षित करती थी। मेरी ज्यादा बात नहीं होती थी। अचानक से वह लड़की यानी हरिप्रिया [illegible] छात्रावास में रहने आई, तो हमारा परिचय निरन्तर बढ़ता गया। छोटा सा परिचय प्रगाढ़ता में परिवर्तित हो गया। सीमा और मैं, छात्रावास से कई बार हरिप्रिया के घर वल्दियाखाल चले जाते थे। सीमा और हरिप्रिया तो आपस में बातचीत करतीं, मैं शाम के वक्त, जब बाबू जी दुकान बन्द करते, तो उनके पास बैठ जाती थी, और उनके जीवन की संघर्ष-गाथा को मैं बड़े ध्यान से सुनती थी, तथा मन ही मन उनके अथक परिश्रम को प्रणाम करती थी। बाबू जी मुझसे कहते थे "आपको तो बहुत कुछ करना है।" आज समझ में आता है कि उनकी आंखें कितनी अनुभवी थीं। जब मेरी नियुक्ति का उन्हें पता चला तो वह बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि मैं तो पहले से ही जानता था कि आपके सपने जरूर पूरे होंगे। बाबू जी का लोक-ज्ञान मुझे बहुत प्रभावित करता था। जीवन में कब, क्या और कैसे करना चाहिए, उसका उन्हें ज्ञान था। परिश्रम से हासिल किये गये अपने सामाजिक और आर्थिक स्तर में मैंने देखा कि उनके घर पर सदैव अतिथियों का आना-जाना लगा रहता था, उन दिनों प्रेमा दीदी, ख्यूराज दा, व दिलीप दा को मैंने उनके जैसा ही सरल-सहज और कर्मठ पाया था। पूरा परिवार क्षेत्र विशेष में अपनी अलग पहचान रखता था। बाबू जी की अगाध आत्मीयता और अपनत्व मुझे बहुत याद आता है। उनके कक्ष में प्रवेश करने पर उनकी रिक्तता का अहसास होता है। अब बाबूजी की जगह ईजा ने मोर्चा संभाल लिया है। वह कोशिश करती हं कि बच्चों को मैं बाबू जी के बदले का भी प्यार दे दूं। ईश्वर ईजा को दीर्घायु प्रदान करे, जिससे वह अपना व बाजू जी, दोनों का प्यार हमें बांटती रहें और उनके स्नेह व अशीर्वाद की छाया में हम सभी परिजन सौभाग्यशाली रहें। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि बाबू जी जहां भी हों, सुखी हों।

जाने कितने ही गये, इस राह से उनका पता क्या/ पर गये कुछ छोड़ इस पर अपने पैरों की निशानी/ वो निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है...

डॉ. वीरेन्द्र शर्मा को पुत्र शोक

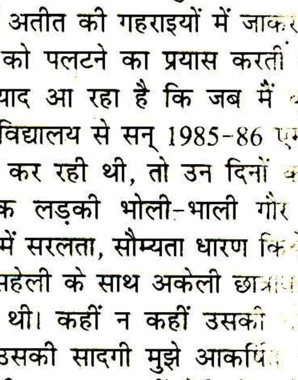

मेरठ। समाज विज्ञान शोध पत्रिका के प्रधान सम्पादक, वीएसएम पीजी कालेज, रुड़की के पूर्व प्राचार्य व मूटा एवं फुफुक्टा के पूर्व अध्यक्ष डॉ0 वीरेन्द्र शर्मा, डीलिट् के छोटे पुत्र डॉ0 आकाश शर्मा, एलएलबी, पीएचडी का 18 दिसम्बर को आकस्मिक निधन हो गया। छियालीस वर्षीय डॉ0 शर्मा पिछले कुछ समय से लीवर व किडनी के रोग से पीड़ित थे। मेरठ के मोतीप्रयाग स्थित आवास पर आयोजित शांति-यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा में शिक्षा, पत्रकारिता व समाज सेवा से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने दिवगंत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए उनके निधन को एक अपूर्णनीय क्षति बताया। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

त्रैतवाद : ईश्वर, जीव व प्रकृति की महत्ता

सुमन कुमार 'वैदिक'

जड़, चेतन- यही दो पदार्थ हैं या इनसे भिन्न कोई और पदार्थ भी है? इस पर ऋषियों के विचारभेद रहे हैं। विचारों की भिन्नता पूर्वकाल से भी रही है। एकेश्वरवाद, द्वैतवाद और त्रैतवाद की विवेचना परम्परागतों से ऋषियों के मस्तिष्क में रही है। अधिकांश त्रैतवाद को ही मान्यता देते हैं। इसके बिना यौगिकता सिद्ध नहीं होती।

भौतिक विज्ञान जड़ (प्रकृति उसके पंचमहाभूत) को जानना तथा आध्यात्मिक विज्ञान चेतन और उसका प्रकृति से संबन्ध को जानना है। प्रकृति से उपराम हो परब्रह्म परमात्मा में आत्मा रमण करने लगता है, जिसे मुक्ति अवस्था कहा गया है। संसार में तीन वस्तुएं विचार करने की हैं। प्रकृति, आत्मा और ब्रह्म। जहां प्रकृति जड़ है, किंतु आत्मा, परमात्मा चेतन है। लेकिन इन तीनों की विशेषता भिन्न-भिन्न है। आत्मा और प्रकृति के पंचमहाभूत का संगम से बने शरीर क्रिया में लाने वाला। जिसमें मन रूपी प्रकृति का प्रतिनिधि आत्मा के सान्निध्य से क्रियाशील हो जाता है। आत्मा के न रहने पर शरीर बन जाता है। इसी प्रकार परमात्मा प्रकृति की शून्यता को क्रिया में लाने वाला है। कुछ लोग आत्मा को पृथक पदार्थ न स्वीकार कर, उसे ब्रह्म का प्रतिबिम्ब मानते हैं। ब्रह्म व्यापक है, जो सदैव व्याप्ता है। शरीर के रहने पर यह मानना कि जो वहां ब्रह्म एक व्यापक था, अब नहीं रहा, तो यह उसकी व्यापकता के गुण को सत्य सिद्ध नहीं होने देता। यहां कुछ मनीषी प्रश्न करते हैं कि यदि शरीर में व्यापता हुआ आत्मा है, तो ब्रह्म क्या है? उसकी सत्ता क्या है? इसके उत्तर में ऋषि कहते हैं कि जैसे आत्मा शरीर को चेतनित बनाती है, उसी प्रकार परमात्मा से प्रकृति पंचमहाभूत क्रियाशील रहते हैं। प्रकृति में जो चेतना है, वह ब्रह्म की है। जब यह चेतना निकल जाती है, तो प्रकृति सूक्ष्मस्वरूप बन ब्रह्म में ओतप्रोत हो जाती है, जो प्रलय काल की स्थिति होती है, जिसे ब्रह्म की रात्रि कहा जाता है। परमात्मा के गर्भ में उस काल में आत्मा इस प्रकार रहती है, जैसे गर्भावस्था में माता के गर्भ में शिशु की आत्मा रहती है। आत्मा के लिए सृष्टि की रचना होती है। रचने वाला प्रभु है और रची जाने वाली प्रकृति है। अपने चित्त के संस्कारों के कारण आत्मा प्रकृति के संयोग से शरीर में आता जाता रहता है। संस्कार मन की आभा से उत्पन्न होते हैं। प्रकृति में भी मन होता है, जो प्रकृति का विभाजन करता है। कहीं नदी, पर्वत बनाता है। संस्कारों का न रहना, आत्मा का प्रकृति से संयोग न होना ही मोक्ष कहलाता है। जिस प्रकार यज्ञशाला की अग्नि की गति ऊर्ध्वा ही रहती है। इसी प्रकार आत्मा की स्वाभाविक गति अपने सखा परमात्मा की तरफ ही रहती है तथा मोक्ष की विचारधारा उसमें स्वाभाविक रहती हैं। त्रैतवाद की मान्यता न देने वाले यह स्वीकार करते हैं कि परमात्मा का प्रतिविम्ब प्रत्येक चित्त पर पड़ता है। उसी के प्रकाश से प्रकृति में नृत्य और जीव में गति होती है। यहां इसे स्वीकारने पर परमात्मा और आत्मा एक शब्द बन जाता है। हमारे यहां अंगिरा और वायु इत्यादि ऋषियों ने माना है कि संसार में तीन पदार्थ ही होते हैं- 1. रचने वाला, 2- उसमें प्रवेश करने वाला, 3- वह पदार्थ, जिससे वह रची गयी है। पं0 रामचन्द्र देहलवी ने इसको अनेक उदाहरणों से समझाया है। अब प्रश्न होता है कि शरीर में आत्मा कहां रहती है? इसके उत्तर में ऋषि कहते हैं कि सृष्टि को सार्वभौम सिद्धांत माना गया है कि सूक्ष्म वस्तु स्थूल में समाहित हो जाती है। जैसे पृथ्वी जल में जल, अग्नि में, अग्नि वायु में, वायु अन्तरिक्ष में समाहित हो जाती है। इसी प्रकार आत्मा शरीर प्रतिष्ठित हो जाती है। आत्मा का ब्रह्म में प्रतिष्ठित होना मुक्ति या मोक्ष कहलाता है। यहां एक प्रश्न है कि यदि आत्मा-परमात्मा भिन्न पदार्थ नहीं हैं, तो संसार की रचना परमात्मा ने क्यों की? यदि रचनाकार को नहीं मानते तो उसका रूपांतर क्यों होता है? प्रकृति कहते ही उसे हैं, जो विकृत होती रहती है। उसी से चित्त, मानव शरीर, संस्कार और भोगवाद बनता है। सृष्टि का चक्र चलता है। ब्रह्म को इसे बनाने की क्या आवश्यकता पड़ी? आत्मा प्रकृति ब्रह्म की तीन संज्ञा बनती हैं। जिस समय मानव साधारण अवस्था में होता है, उसमें तृष्णा, कामवासना होने से देवासुर संग्राम उसके अन्दर निरंतर चलता है। जब देवासुर संग्राम समाप्त हो जाता है, तब आत्मा की प्रतिभा प्रभु से रमण कर जाती है। चित्त के आवेश समाप्त होने पर उसे मुक्ति अवस्था कहते हैं। उस काल में नम्रता उत्पन्न हो, अहम् भाव नष्ट हो जाता है। जब तक आत्मा परमचेतना से परिचय नहीं करता, तब तक संसार में उसका आवागमन रहता है। वह भोगवाद, माया प्रपंच को ही कहीं आनन्द स्वीकार कर लेता है। जगत में आने का हमारा उद्देश्य संसार में मन, प्राण को एकाग्र करके धारणा, ध्यान, समाधि में प्रविष्ट हो चित्त के संस्कारों को नष्ट करना है। चित्त में संस्कारों की समाप्ति पर ही वास्तविक शान्ति होती है। स्वामी दयानन्द ने भी त्रैतवाद सिद्धांत माना है। **(लेख ब्र. कृष्णदत्त जी के प्रवचनों पर आधारित है।)**

हिन्दी साहित्य पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

हिन्दी भाषा में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी0) ने स्मृति शेष चौधरी गुगनराम सिहाग, उनकी छोटी बहिन स्मृति शेष श्रीमती गीना देवी व स्मृति शेष रज्जी देवी [illegible]राम सिहाग की पावन स्मृति में तीन साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये हैं। ये साहित्य पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य हिन्दी भाषा में सुन्दर, संग्रहणीय, मौलिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक हिन्दी भाषा के लेखकों, प्रकाशकों व सम्पादन को प्रोत्साहन करना है। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य के तीन साहित्यकारों के लिए तीनों पुरस्कार अलग-अलग रूप से आरक्षित हैं।

इन पुरस्कारों के लिए कोई भी लेखक, सम्पादक, कवि, शोधकर्ता अपने-अपने कहानी संग्रह, काव्य संग्रह, दोहा संग्रह, शोध ग्रन्थ, बाल साहित्य, प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद, योग, मुक्तक संग्रह, रूबाई संग्रह आदि जनवरी 2000 से दिसम्बर 2012 तक के मध्य प्रकाशित पुस्तकों की एक-एक प्रतियां, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी-अपनी प्रविष्टियां 31 जनवरी 2014 तक सोसायटी के कार्यालय में भेजे जा सकते हैं। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। पुरस्कारों की कोई सीमा निश्चित नहीं है।

सोसायटी/निर्णायक मण्डल का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा। एक लेखक/सम्पादक कितनी भी रचनाएं भेज सकता है। एक लेखक/सम्पादक को उसकी एक से अधिक पुस्तकों पर भी पुरस्कार दिया जा सकता है। पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें लौटाई नहीं जायेगी।

सचिव- नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

एम.ए. (समाज शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी), एम.लिब., एम.फिल., एल-एल.बी. (ऑनर्स), डी.पी.आर. (रजत पदक विजेता), प्रभाकर, शिक्षा विशारद, आयुर्वेदरत्न, धर्माधिकारी, विद्या वाचस्पति)

चलभाष : 09466532152, 09255115175

कार्यालय पता- सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन, 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)- 127021

अपना नया साल कब?

विदेशी वर्ष पर कैसा हर्ष?
हम मनाएं भारतीय नववर्ष!

जरा सोचें- पहली जनवरी-

- क्या यह अपना भारतीय नववर्ष है?
- क्या यह कोई पर्व, त्यौहार है?
- क्या इस दिन किसी देवी देवता की पूजा होती है?
- क्या इस कड़ाके की ठंड में घर से निकलकर सड़कों, पार्कों में व्यर्थ घूमना, अमानवीय आचरण करना, ये सब शोभनीय है?
- क्या यह अंग्रेजों द्वारा थोपी हुई मानसिक गुलामी नहीं है?
- इस दिन हम कौन सी संस्कृति को अपनाकर अपने को सुसभ्य बताना चाहते हैं? क्या यह सब आचरण अपने लिए, समाज के लिए, देश के लिए एवं भाजी पीढ़ी के लिए उचित है?

स्वयं से पूछें-

- क्या हम भारतीय स्वाभिमानहीन हो गए हैं?
- क्या हमें अपने पूर्वजों, अपनी माटी, अपनी संस्कृति व परम्पराओं पर गर्व नहीं है? हमारा धार्मिक अनुष्ठान, विवाह, श्राद्ध आदि कर्म विदेशी पंचाग से सम्पन्न होते हैं?
- क्या कोई भी देश अपनी संस्कृति को छोड़कर महान् हो पाया है?
- क्या हम अब भी मानसिक रूप से गुलाम हैं?
- क्या सच में हमें भारतीय होने में गर्व नहीं है? यदि गर्व है तो पहली जनवरी नया साल कैसे? हम अंग्रेजों के पिछलग्गू बनकर अंधानुकरण नहीं तो और क्या कर रहे हैं?

'अपना नया साल'

चैत्र महीना शुक्लपक्ष का पहला दिन

यही हमारा नववर्ष का प्रथम दिन है।

उसी दिन हम इसे धूमधाम से सपरिवार मनाएं।

निवेदक-

अनुराधा रस्तोगी, 'बिहार कोकिला', कैमूर

भयंकर बाढ़ से पीड़ित

आर्ष गुरुकुल, होशंगाबाद (म.प्र.)

सहायता हेतु अपील

धर्मप्रेमी सज्जनों, सादर नमस्ते!

लगातार भारी वर्षा से नर्मदा नदी में रिकार्ड तोड़ भयंकर बाढ़ आयी, जिससे नर्मदा नदी के तट पर स्थित आर्ष गुरुकुल, होशंगाबाद के भवनों में चार फुट पानी भर गया, जिससे गुरुकुल की कृषि नष्ट हो गयी, गायों का भूसा सड़ गया, ईंधन की लकड़ी बह गयी, साग-सब्जी की फसल खराब हो गयी, भवनों को क्षति पहुंची, पांच लाख रुपयों की मूंग एवं पांच लाख रुपयों की धान सड़-गल कर नष्ट हो गयी, भूसा लकड़ी आदि में लगभग दो लाख रुपयों की हानि हुई। इस प्रकार गुरुकुल को जुलाई-अगस्त 2013 में लगातार वर्षा व भयंकर बाढ़ से 12 लाख रुपयों की हानि हुई। भगवान की कृपा से गुरुकुल जनहानि से बच गया। आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद मुख्य रूप से दान के सहारे से ही चल रहा है। प्रतिदिन एक सौ व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध करना होता है, जिसमें प्रतिदिन कम से कम चार हजार रुपये और मासिक एक लाख बीस हजार रुपयों का भोजन मात्र पर खर्च होता है। इस समय गुरुकुल के पास भोजन-व्यवस्था के लिए भी राशि नहीं है। व्यापारियों से भोजन सामग्री दाल, चावल, तेल आदि उधार लाया जा रहा है, महंगाई की मार तो झेलनी ही पड़ रही है। अतः आप सभी महानुभावों, धर्मप्रेमी सज्जनों, आर्यजनों व सभा, संस्थाओं से विनम्र प्रार्थना है कि आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) की तत्काल आर्थिक सहायता करने की कृपा करें। गुरुकुल सदैव आपका आभारी रहेगा। **ओ३म् शम्।**

गुरुकुल का खाता सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया में 'आर्ष गुरुकुल समिति' के नाम से है। खाता नम्बर है- 1468328964 IFC COD No. CBIN - 0280757 (धनराशि 'आर्ष गुरुकुल समिति' के नाम भेजें।)

स्वामी ऋतस्पति (आचार्य जगद्देव नैष्ठिक) -अध्यक्ष,

मोबा. : 09827513029

राजनीति की वैदिक व्यवस्था

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

राजधर्म के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में प्रकाश किया है कि वेद व सत्य शास्त्रों में राजधर्म के विषय में अनेक स्थानों पर प्रत्येक विषय को ध्यान में रखते हुए प्रकाश किया है। मनुस्मृति, शुक्रनीति, महाभारत आदि में भी राज्य व्यवस्था पर नीति युक्त वर्णन है। वैदिक व्यवस्था विश्व में उच्च कोटि की व्यवस्था है। इसी के चलते प्राचीन काल में महाराजा अश्वपति, यथाति, दलीप, रघु, मनु, इक्ष्वांक, जैमिनी, राम, कृष्ण, युद्धिष्ठिर, भोज, चन्द्रगुप्त, सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, सर्याति, अनराज्य मरूत्त और भरत जैसे चक्रवर्ती शासक हुए। सम्पूर्ण पृथ्वी पर इनका शासन था और प्रजा सुखी थी। यदि हम अपनी उस प्राचीन राज्य व्यवस्था का अवलोकन करें तो हमें राज्य व्यवस्था व समाज शास्त्र के लिए विदेशों की नकल की आवश्यकता नही पड़ेगी। वैदिक शास्त्रों में वह सब ज्ञान है जिसकी आज के युग में आवश्यकता है। ऋषि ने सर्व प्रथम कहा है कि जैसा परम विद्वान ब्राह्मण होता है वैसा विद्वान सुशिक्षित होकर क्षत्रिय को योग्य है कि सब राज्य की रक्षा न्याय से यथावत करें।

ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कार क्षत्रियेण यथाविधि। सर्दस्यास्य यथा न्यायं कर्त्तव्यं परिरक्षणम।। –मनु 6–2

ब्राह्मण का अर्थ ऐसे विद्वान से है जो वेद को जानने वाला हो, वेद वेद़ांगों को सम्यक रूप से पढ़ा हो, उनका अनुसरण भी करता हो। ऐसा विद्वान क्षत्रिय राज्य की रक्षा न्याय के साथ करने वाला हो। यह भी कहा हैं कि एक ही स्वतंत्र राज्य को चलाने वाला न हो। तीन सभाओं का वर्णन हैं जो एक दूसरे के आधीन हों। यदि एक स्वतंत्र व्यक्ति राजा होगा तो प्रमाद, लोभ व मनमानी कर राज्यव्यवस्था को चौपट कर देगा।

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।। ऋ0 मं03 सू0 38 मं06

राज्य में तीन सभाएं होनी बताई हैं, जिनमें विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा व राजार्य सभा क्रमशः विद्या सुशिक्षा धर्म व न्याय तथा राज्य व्यवस्था को सुदृढ़ता से चलाने वाली होती हैं और प्रजा के लिए सुख देने वाली व्यवस्था करती हैं। सरकारों में भ्रष्टाचार के विषय पर चुप्पी साध ली जाती है। कोई एक दूसरे के लिए नही बोलता। भ्रष्टाचार और अधिक बढ़ता ही जा रहा है भारत की जो स्थिति आज है वह अत्यन्त शोचनीय है। प्राचीन काल में राजा व सभासद विद्वान तो होते ही थे उनके राज्य में भी पक्षपात रहित विद्वान राज्य पालन में पूर्ण सहयोग करते थे।

इमं देवाऽअसपन्न सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जाब राज्य येन्द्रस्येन्द्रियाय।। –यजु0 अ09 मं040

हे विद्वानों, राज प्रजाजनों तुम इस प्रकार के पुरूष को बड़े–बड़े विद्वानों से युक्त राज्यपाल और परम ऐश्वर्य युक्त राज्य और धन के पालन के लिए सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित पूर्ण विद्या विनययुक्त सब के मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के भूगोल को शत्रुरहित करो। ऋषि ने अथर्ववेद के मन्त्र का प्रकाश किया है कि **तं सभा च समितिश्च सेनां।। –अथर्व कां0 15 अनु0 2 व 9 मं0 2,**

अर्थात् उस राजधर्म को तीन सभा संग्रामादि व्यवस्था और सेना मिलकर पालन करें।

वेदानुसार वर्णन है कि किसी एक को ही अधिकार नहीं देना चाहिए, यदि राजा को या सभा को ही अधिकार दे दिया जाये तो राज्य व्यवस्था नष्ट हो जाएगी।

"एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा को सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।" –सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ–समु0

वैदिक व्यवस्था अत्यन्त विधि पूर्वक थी। सत्य न्याय प्रिय थी। चाणक्य जैसे विद्वान थे, इसीलिए चन्द्रगुप्त जैसे चक्रवर्ती शासक हुए। महाभारत में विदुर जैसे श्रेष्ठ धर्मात्मा विद्वान मंत्री थे, तब भी भूगोल के मांडलिक राजा आदेशानुसार हस्तिनापुर आते जाते थे। आज सैकड़ों की भरमार है, परन्तु भारत भूमि पर चारों ओर अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार व बलात्कार की आंधी चल रही है। कारण स्पष्ट है जैसा राजा होता है प्रजा भी वैसी ही होती है। आज अधिकांशतः उच्च अधिकारी वर्ग में सभासदों में ही बहुत से व्यक्ति दुराचारी हैं।

राजसभा के सभासद के लिए प्रकाश किया है कि वे चारों वेदों का कर्मोपासना ज्ञान विद्याओं के जानने वालों से तीनों विद्या सनातन दण्डनीति, न्याय विद्या तथा आत्म विद्या अर्थात् परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव रूप को यथावत जानने रूप ब्रह्म विद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ सीखकर सभासद व सभापति हो सकें।"

मनु को राज्य व्यवस्थानुसार सभासद जितेन्द्रिय द्रहोत्साही, सदाचारी व काम–क्रोध से दूर होने चाहिए तथा मंत्री सात व आठ हों, जो कि सुपरीक्षित स्वराज्य में उत्पन्न हुए हों अर्थात् उनका जन्म अपने ही देश व भूमि में हुआ है, जो यहां के वातावरण में पले व बढ़े हों, वेदादि शास्त्रों के जानने वाले हों, उत्तम धार्मिक हों, चतुर हों, शूरवीर तथा श्रेष्ठ कुल के हों, राजा की सहायता के लिए उत्तम मंत्रियों का होना आवश्यक है। बिना सहायता के कार्य नहीं हो सकता तथा राज्य कार्य हेतु संधि, विग्रह, स्थान गुप्तिम लब्ध प्रशननानि, समुदयम आदि छह विषयों पर नित्य प्रति विचार करने वाले हों। राज्य के अधिकारी अर्थात् नौकर कार्य को सिद्ध करने हेतु रखें वह आलस्य रहित, बलवान व बड़े चतुर होने चाहिए। दूत भी सभी शास्त्रों में विद्वान होने चाहिए। अन्याय रूप दण्ड न हो अतः "अमात्य को दण्डाधिकार होना चाहिए राजा के आधीन कोश और राजकार्य तथा सभा से आधीन सब कार्य और दूत के आधीन किसी से मेल व विरोध करना अधिकार देवे। –सत्यार्थ प्रकाश

राजा, सेनापति, न्यायाधीश, नौकर, अधिकारी, सभासद सब जहां विद्वान हैं चारों वेदों के जानने वाले हैं। न्याय व्यवस्था के विषय में विशेष प्रकाश किया है कि जो सत्य ही बोलने वाला हो, यही नहीं पक्षपात से दूर हों, लोभी व कपटी न हों और विद्वान तथा धार्मिक हों– ऐसा व्यक्ति साक्षी होना चाहिए।

बलात्कार व व्याभिचार जैसे अपराधों में साक्षी से अधिक पूछताछ न कर कठोर वचन व दण्ड व्यवस्था करनी चाहिए और बुरे कार्यों का समाज में प्रचार न कर गुप्त ही रखना चाहिए। राजा के लिए बताया गया है कि जब वह न्यायासन पर बैठा हो तब किसी के साथ पक्षपात न करे, यदि दण्ड देना है तो दण्ड देना ही चाहिए, छोड़े नहीं चाहे उसकी स्त्री, मित्र, पुत्र, आचार्य, पिता, पुरोहित ही क्यों न हो।

पिताचार्यः सुहन्माता आर्या पुत्रः पुरोहितः। नादण्डयो नाम राज्ञोऽस्ति यः स्वधर्मे न तिष्ठति।।

अर्थात् जो धर्म में न चले वह चाहे अपना सम्बन्धी ही क्यों न हो अदण्डय नहीं होता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुस्मृति, शुक्रनीति, विदुर, महाभारत शान्ति पर्व एवं वेद उपनिषद आदि सत्य एवं वेदाधारित ग्रन्थों शास्त्रों के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश में राजधर्म विषय पर जो प्रकाश डाला है वह इसीलिए कि हमारा जो प्राचीन काल में चक्रवर्ती शासन रहा वह वेदानुसार आज्ञा का पालन करने से ही हुआ। जब हम वेद से दूर होते गए तो प्रमाद, आलस्य, पक्षपात, लोभ बढ़ते गए, आश्रम व वर्ण व्यवस्था विकृत होती गईं, माताएं जो सन्तानों को संस्कारों से सुसंस्कृत करती थीं, शुरवीर, धर्म व मर्यादा पालक, निडर, सूर्य की भांति ज्ञान के प्रकाश की तरह तेजस्वी वेदवाणी, ज्ञानवान संताने होती थीं, वह वैदिक प्रवाह कम हो गया। आज कोई महाभारत के कृष्ण व राम राज्य के दिलीप दशरथ या राम सा कोई हो, तो यह सब रोग कट जायें, उसके लिए वह वैदिक वातावरण बनाना होगा। ऋषि, मुनि, गुरूकुल, आश्रम, अग्नि होत्र, वेद प्रचार कार्य कर ज्ञान का प्रकाश करना होगा।

गली नं.–2, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा–203131
मोबा. : 8979794715

पाकिस्तान से विस्थापित आर्य परिवारों की सहायतार्थ

आर्यावर्त केसरी की पहल

विस्थापितों की सहायतार्थ स्थापित निधि में सहयोग की अपील

पाकिस्तान में भयंकर अत्याचारों के कारण आए हुए आर्य परिवार की सहायतार्थ एक निधि स्थापित करने का संकल्प आर्यावर्त केसरी ने लिया है। उपर्युक्त सहयोग निधि में दान राशि भेंट करने वाले महानुभावों के नाम पते चित्र सहित प्रकाशित किये जाएंगे। अभी तक प्राप्त अन्य सहयोग राशि का विवरण इस प्रकार है–

पूर्व में प्राप्त दान- डॉ. प्रियंवदा वेदभारती-500/-, नवीन कुमार रस्तोगी-2000 + 5000 = 7000/-, सुमन कुमार वैदिक-1100/-, आर्यावर्त केसरी-1100/-, गुरुकुल चोटीपुरा-5000/-, महिला आर्यसमाज, भोजपुर खेड़ी (बिजनौर)-500/- श्रीमती सरला अग्रवाल, बरेली (उ.प्र.) : रुपये 500/-,

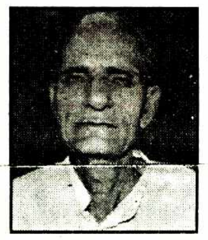

श्री सुरेन्द्रपाल आर्य
औरंगनगर, राड़धना (मेरठ)
रुपये- 500/-

श्री इन्द्रदेव गुलाटी
बुलन्दशहर (उ.प्र.)
रुपये- 1100/-

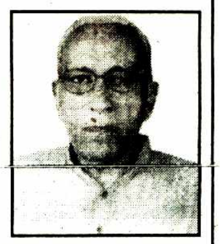

कुल योग- रुपये 17,300/-

पाकिस्तान निवासी श्री लक्ष्मण आर्य, वर्तमान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में प्रवासी चलभाष- 09758342355 को अब तक भेंट की गयी धनराशि का विवरण इस प्रकार है- रुपये 8600 + 6600 + 500 = 15,700/-

विस्थापित निधि में अवशेष धनराशि : रुपये 1,600/-

विशेष : दानदाता महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपनी व्यक्तिगत/संस्थागत सहयोग राशि धनादेश/ चैक द्वारा आर्यावर्त केसरी के नाम से अथवा आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता सं0 30404724002 में जमा कर सकते हैं, जिसकी सूचना कार्यालय को अवश्य दें।

हमारा पता है :–
आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट– मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ0प्र0)–244221, मोबा. 9412139333

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2014 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं–

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

उपर्युक्त संख्या-1 एवं 2 पर पुरस्कार सामान्य: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आर्य नहीं होती। संख्या-3 पर दिये जाने वाले पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं हैं। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए 31 दिसम्बर 2013 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण-शैक्षिक योग्यता, लेखन, प्रचार कार्य, जनहित में योगदान, दो फोटों आदि के साथ अपने दूरभाष (चल) एवं पूर्ण पते सहित भेजने का कष्ट करें।

देवराज आर्य, मंत्री

३० को मनायी गयी शास्त्री जी की जयन्ती

अमरोहा। आर्यउपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा के तत्वावधान में 30 दिसम्बर को प्रकाशवीर शास्त्री स्मारक इंटर कालेज, रहरा में प्रखर सांसद, ओजस्वी वक्ता, आर्य नेता व राष्ट्रवादी चिन्तक प्रकाशवीर शास्त्री की जयन्ती श्रद्धापूर्वक मनायी गयी। इस अवसर पर श्री शास्त्री को नमन् किया गया।

श्रुति का हिन्दुस्तान एरोनोटिक लिमिटेड में चयन

ग्रेटर नोएडा। सुमन कुमार वैदिक की पुत्री श्रुति का चयन हिन्दुस्तान एरोनोटिक लिमिटेड में हो गया है। श्रुति ने प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपूरा से ली तथा नोएडा से इलैक्ट्रॉनिक्स में इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। प्रतिभाशाल श्रुति सदैव ही अपनी कक्षा में प्रथम रही।

वेदोपनिषद ज्ञानकथा एवं चतुर्वेद शतकम्

सुमन कुमार 'वैदिक'
ग्रेटर नोएडा।

ग्राम खानपुर में 8 से 12 जनवरी तक चतुर्वेद शतकम् के मंत्रों से यज्ञ तथा वेदोपनिषद कथा का आयोजन किया जा रहा है, जिसके कु. सविता आर्य मुख्य वक्ता तथा महाशय बच्चूसिंह आर्य भजनोपदेशक अपने वैदिक ज्ञान का उपदेश देंगे। कार्यक्रम के संयोजक सत्य सनातन वैदिक विचार समिति ग्रेटर नोएडा हैं।

वेदोपनिषद ज्ञानकथा एवं चतुर्वेद शतकम्

बिजनौर (पंकज अग्रवाल)। आर्यसमाज झालू (बिजनौर) के तत्वावधान में वार्षिक महोत्सव 29 व 30 अक्टूबर को बड़ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी व पंडित नरेशदत्त आर्य भजनोपदेशक इत्यादि विद्वानों ने वेदगंगा बहाई।

आज ही मंगाएं : 'ऋषि अर्पण'

महर्षि दयानन्द के जीवन के दुर्लभ प्रसंगों तथा महत्वपूर्ण फोटो युक्त एक संग्रहणीय पुस्तक

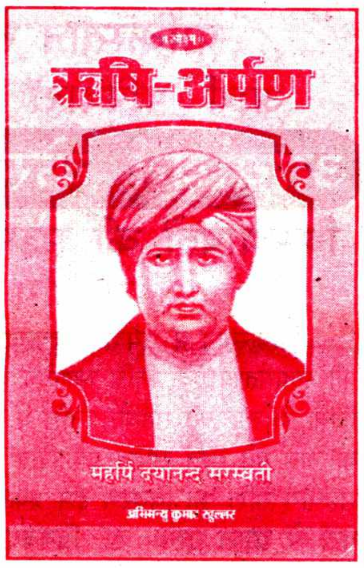

लेखक- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजी गंज, लश्कर,
ग्वालियर-४७४००१ (म.प्र.)
फोन- 0751-2425931,
09303448441

विक्रय मूल्य रुपये १२५/-
(डाक व्यय सहित)

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

1. आर्य प्रकाशन, 814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006 फोन- 011-23213280, 23233280
2. श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (फोन-0294-2417294)
3. राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, माधव महाविद्यालय के सामने, नई सड़क, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.) (09425109685)

सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएं

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप '५.६X९.०' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०/- शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे। आज ही अपना आर्डर बुक कराएं और सत्यार्थ प्रकाश पाएं।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 (राज०)
मोबा.: 09314235101 (कार्यकारी अध्यक्ष), 09829063110 (व्यवस्थापक)

आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 ६ 08273236003

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय- **आर्यावर्त केसरी** मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर उ.प्र. (भारत) -२४४२२१ से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com